काया कल्प प्रकाशन मन्दिर,
जयपुर।

प्रथम बार १०००
मूल्य १।)

मुद्रक
माडर्न आर्ट प्रिन्टर्स,
अजमेर रोड, जयपुर।

—: समर्पण :—

आम्नाय धुरन्धर, आगमरत्न, साहित्य महोपाध्याय, महोपदेशक
आशुकवि, कविभूषण, काव्यरत्नाकर, वेदान्त भूषणादि
अनेक विरुद विभूपित, पूज्यवर

"पं० श्रीहरि शास्त्री दाधीच"

की सेवा में

आपकी कृपा व प्रेरणा से "पगु' लङ्घयते गिरिम्" के अनुसार जो भी कुछ टूटा फूटा लिखा है आपके कराम्बुज में समर्पण कर मैं कृत कृत्य हुआ हूं।

दीपावलि
सम्वत् २००७
दयानन्दाब्द १२६

मैं हूं आपका
वैद्य विजयशङ्कर शास्त्री
जयपुर

भूमिका

इस बात को सभी सहृदय विद्वान मानते हैं कि हिन्दी भाषा के विपुल साहित्य में अभी ऐसे नाटक अंगुलिगण्य ही हैं जिनमें सच्चा और समयोपयोगी सुधार होने लगे।

इस बात की पूर्ण आवश्यकता है, क्योंकि साहित्यकार विज्ञ पुरुष ही देश को उन्नत आदर्श बनाने के कलाकार होते हैं। इसमें अभिनय के द्वारा जो आदर्श मार्ग प्रदर्शित किये जाते हैं उनका प्रभाव इतना जल्दी जनता पर पड़ता है जितना पढ़ने और व्याख्यानों से नहीं।

ऐसे कलाकारों का आविर्भाव सच्चे सिद्ध सारस्वत कवि ही करते हैं, जिनकी कविता तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होती है इत्यादि बातों को समझते हुए यह कहना तथा मानना पड़ेगा कि इस समय भारत के दृष्टिकोण को समझते हुए तथा युगधर्म की परिस्थितियों को विचार में रखते हुए किसी किसी कवि के कोई कोई नाटक सफलता पर पहुँचते हैं।

इसी उद्देश्य से राजस्थान के जयपुरीय प्रसिद्ध वैद्य विजयशङ्कर जी शास्त्री ने भी यह नाटक लिखने का सराहनीय प्रयत्न किया है।

हमने इस नाटक को आमूल चूल पढ़ा और सामयिक गतिविधि से पर्यालोचित भी किया तो यह नाटक हमारी विचार धारा में ठीक जचता है, यदि इसे रंग मंच पर योग्य पात्रों द्वारा प्रयुक्त किया जाय तो परिणाम श्रेयस्कर और देश दृष्टिकोण को बलप्रद ही सिद्ध होगा।

इसका नाम कवि ने 'परिणाम' रखा है। अच्छा है। 'परिणाम' की शुभाशुभता को दर्शक सामाजिक स्वयं जोड़ते रहेंगें, यदि कवि स्वयं किसी विशेषण का उपादान कर देता तो नाम देखते ही तथा सुनते ही नाटकीय भावसार सारा मालूम हो जाता। अस्तु, नाटक-लेखक ने एक हिन्दू महिला को सामाजिक अत्याचारों की शिकार बनवाकर स्पष्ट समझाया है कि एक हिन्दू पुरुष या महिला समाज से तिरस्कृत होकर कितनी विपरीत हो उसी समाज की घातक बनती है।

लेखक का भाव हिन्दू मुस्लिम एकता (पारस्परिक प्रेम) पर धारावाहिक चलता है, जिस विचारधारा में आज हमारे देश के बड़े बड़े नेता अधिकाधिक तत्परता से लगे हैं। इसमें हिन्दू समाज की रूढ़िवादिता और धर्मान्ध-परम्परा संपातजन्य क्रूरता पर अवला की चीख स्पष्ट सुनाई पड़ती है। धर्म परिवर्तन से क्या क्या हानियां हो जाती हैं यह भी ध्वनित होता है।

वास्तव में इस नाटक की लेख शैली भी सर्व साधारण के लिये सुगम होगी क्योंकि भाव सभी स्वतः प्रकाश हैं। हाँ, संगीत के पद्य

जहां तहां प्राचीन तथा नवीनपन में घुलमिल से गये है।

थोडासा मनोरंजन भी कवि ने उपस्थित किया है इसके बिना दर्शकों की प्रवृत्ति मन्द पड़ जाती है।

नाटक कान्ता सम्मित उपदेशों में है। कान्ता सम्मित उपदेश मधुरता के साथ सचाई पर उतारने के लिये लुभावने प्रयोगों को अपनाता है। यही भावना प्राचीन नाटककारों ने भी अपनाई है। समयानुसार परिवर्तन जो अपनी कथा भावना में फबने योग्य होते हों उन्हें अपनाना कवि का कौशल है, जो अपनी कठिन भाव छाया को भी सहजशीतल और उपासनीय बना देता है।

वर्तमान समय की प्रगति में यह नाटक आदर पा सकता है, इससे मैं सहमत हूँ।

सामयिक नाटक बहुत से देखते हैं तो हमें कहीं कहीं इतना मनोरंजन का बाहुल्य दिखाई प [ ] । है जो आदर्श अनुकरणीय कथानक को बहुत दूर फेंक देता है। इससे वे नाटक निरे कोरे प्रतीत होने लगते हैं।

रस के दोषों में यह भी एक दोष ही है ऐसा साहित्यकार तथा अभिनय लेखकों ने लिखा है। इस पर हमारे 'परिणाम' प्रणेता वैद्यजी का पूरा ध्यान रहा है। क्यों न रहे आखिर शास्त्री हैं। शास्त्री लोग ही इधर इतना ध्यान न रखें तो फिर कौन रखेगा।

इत्यादि बातों से यही कहना पड़ता है कि परिणाम अच्छा परिणाम प्रदर्शित करेगा, यदि इसके अभिनायक पात्र नि स्वयं समझे हुये होंगे।

यह 'परिणाम' नाटक वैद्य विजयशङ्कर जी शास्त्री की दूसरी रचना है। आपने इससे पूर्व "आज का समाज" नामक एक और नाटक लिखा है उसमें भी समयानुसार समाज के व्यवहारों पर अच्छा प्रदर्शन है।

इस प्रकार इस नाटक की भूमिका के कुछ वाक्य लिखकर हम हमारे नवोदित नाटक प्रणेता को आशीर्वाद देते हैं कि वैद्यजी की प्रतिभा नित्यनवीन भावों से भरपूर हो, जिससे और भी साहित्य सर्जन में वैद्यजी अपना कौशल प्रदर्शित करते रहें।

इसके प्रूफ संशोधक तथा प्रेस कर्मचारियों की असावधानी से भाषा के विरामादि चिन्ह तथा कहीं २ कुछ अक्षर भी अस्त व्यस्त छप गये हैं। वैद्यजी को चाहिये वे पाठकों से इसकी क्षमा प्रार्थना कर आगे के संस्करण में इन्हें सुधार दें। यह साधारण सी भूल है। शीघ्रता से कार्य करने से इसका हो जाना सामान्य सी बात है।

श्रीहरि शास्त्री दाधीच

प्रो० महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर (राजस्थान)



लेखक

❀ प्रारम्भ के दो शब्द ❀

प्रिय पाठक गण !

मैं न लेखक हूं, न समालोचक, फिर भी मैने अपने भावों को प्रकाश में लाने की धृष्टता ही की हैं। साहित्य से अनभिज्ञ व्यक्ति का यहप्रयास अक्षम्य होना चाहिये क्योंकि 'रसरी आवत जातते सिल पर होत निसान-' तुलसी की इस सूक्ति के अनुसार ही मैने प्रयत्न आरम्भ किया है, अतः आप मुझे दोषी होते हुये भी क्षमा करेंगे।

हां, कइ विघ्न वाधाओं के आजाने से मेरे स्वयं प्रूफ नहीं देखने के कारण अनेक स्थानों पर उपयुक्त चिन्ह नहीं होने आदि का जो दोष आगया है वह खटकने वाला है।

आशा है पाठक प्रथम प्रकाशन के इस दोप को अवश्य क्षमा करेंगे।

लेखक

पात्र सूची

पुरुष पात्र

१—रमेश	पं० दुर्गादत्त का तृतीय पुत्र।
२—महेश	पं० दुर्गादत्त का प्रथम पुत्र।
३—पं० दुर्गादत्त	एक उच्चकुलीन ब्राह्मण।
४—डा० सैयद	रमेश का एक मित्र।
५—प्रेमी	रमेश का मित्र।
६—बद्रीनारायण खन्ना	महेश का सहयोगी।
७—सुमेर	खन्ना का मित्र।
८—खानबहादुर (मौलाबक्स)	महेश का मित्र
९—कर्मसिंह	एक अकाल पीड़ित हरिजन।
१०—जहीर उपनाम जगदीश	शान्ति का पुत्र।
११—शेरखां	जहीर का साथी।

मजिस्ट्रेट, एडवोकेट, इन्सपेक्टर, मौलवी, सेठ, आचार्य, आलूवाला, सेवक आदि।

महिला पात्र

१—अरुणा	कर्मसिंह की पुत्री, रमेश की धर्मपत्नी
२—राजेश्वरी	पं० दुर्गादत्त की धर्मपत्नी।
३—शान्ति	पं० दुर्गादत्त की विधवा पुत्रवधू।
४—चम्पा	बद्रीनारायण खन्ना की धर्मपत्नी।
५—ह्वाइट रोज	एक नर्तकी, चम्पा की बहिन।

सेठानी, भिखारिन, बुढ़िया, बालिकायें आदि।

प्रस्तावना

(भारत के मानचित्र को लक्ष्य करते हुए नट नटी परमेश्वर की प्रार्थना कर रहे हैं।)

जय जय शङ्कर हे विश्वम्भर,
हे शरण्य कारुण्य निधान !
अज अव्यय अप्रतिम अगोचर,
अविनाशी अनन्त गुण खान।
अमित अमोघ असीम अमायी,
आशुतोष अविचल अखिलेश।
ऐसी कृपा करो जिससे यह
विश्व वन्द्य हो भारत देश।

नटी—आर्य ! मैंनें सुना और आपनें भी कहा मेरा आर्य प्रदेश अनार्यों के पंजे से मुक्त होगया। आज युग युग के वन्दी आर्य स्वतन्त्र होकर निज देश की सुयश पताका भूमण्डल के समस्त राष्ट्रों में उच्चतम फहराने को उत्सुक हो उठे। किन्तु क्या कारण है स्वामी ! मुझे तो आज भी मेरे अभागे देश की वही स्थिति प्रतीत होती है। एक ओर पूंजीपति अपने मनोविनोद में निरर्थक धन को लूटाकर आनन्द का उपभोग करते हैं, दूसरी ओर परिश्रमी निर्धन समाज, अन्न कण के लियें तरसते हैं। समाज के मानी जन चरित्र व आचार की अवहेलना कर वाह्यावरण व लोक लज्जा के अवगुण्ठन में पाप कृत्यों को छिपा समाज और देश को धोखा देते हैं। विधवायें एक मात्र अभिशाप हैं। समाज द्वारा तिरस्कृत व पतिता वनाई जाकर देश द्वेषी उत्पन्न करने को वाध्य की जाती हैं। आज भी धर्म के नाम पर निर्दोष व्यक्तियों

का रक्त बहाया जाता है। देश के जनजागरण रचनात्मक कार्यों से मुंह मोड़ प्रचार की दुन्दुभि से जनता की वास्तविक वाणी को छिपाने का निरर्थक प्रयत्न करते हैं। क्या फिर भी मैं देश को स्वतन्त्र मान लूं ?

सूत्रधार—प्रिये ! आज मेरा देश स्वतन्त्र है, स्वतन्त्र होने पर भी परतन्त्रता के चिन्ह दृष्टिगत होने का कारण एक मात्र देश के साहित्यकारों की पुरानी नीति रीतियां ही हैं। प्रिये ! समाज के रास्ते को उज्ज्वल (स्वच्छ) बनाने वाला साहित्यकार ही है। यदि आज मेरे देश के साहित्यकार पुराने गीत गाना बन्द कर नवयुग निर्माण के समय का समाज को रास्ता बतलादें तो कोई आश्चर्य नहीं, शीघ्र ही देश उक्त सांसर्गिक भीषण रोग से मुक्त हो जावे।

नटी—नाथ ! मेरी आपसे सानुनय प्रार्थना है कि जनता के सम्मुख चेतावनी के लिये किसी अभिनय का दिग्दर्शन करें, जिससे मेरा समाज इस क्षय रोग से शीघ्र ही मुक्त हो सके।

सूत्रधार—प्रिये ! जैसी तुम्हारी इच्छा। किन्तु आज के वातावरण के अनुकूल किस साहित्यकार का प्रणीत अभिनय प्रदर्शन किया जाय, यह विचारणीय है।

नटी—स्वामिन् ! आपने परसों तरसों ही एक नवीन परिणाम नाटक का नाम सुनाकर उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी, और उसे देश के लिये बहुत उपयोगी बतलाया था। क्या भूल गये ?

सूत्रधार—अहा, क्या ही अच्छा स्मरण दिलाया, वाह प्रिये ! तुम्हारी स्मृति वन्य और अभिनन्दनीय है। मैं उसी अभिनय का प्रदर्शन कर आज समाज के दुलारे हृदयों का अनुरञ्जन करते हुये देश की दशा पर विशेष प्रकाश डालना चाहता हूं।

नटी—तो फिर बतलाइये, वह नाटक किस नवीन साहित्यकार की कलम का कौशल है। परिचय तो हो।

सूत्रधार—नाटक प्रणयन करने वाले का परिचय उसके विचारों से अपने आप होगा, सभ्य लोग उसे स्वयं समादर देंगे। बड़ी देर हुई, मैं बहुत कार्य व्यस्त तो था ही, इधर आते ही तुमने यह देश की बात कह कर मुझे और भी कार्य वाहन में लगा दिया। खैर, कोई गाना तो सुनादो।

नटी—जो आज्ञा आर्य !

(नटी गाती है)

बना है क्या विचित्र संसार।
कोई स्वारथ निरत हुए नर, कोई हृदय उदार,
कोई देश पर न्यौछावर है, कोई करै अपकार। बना है ॥१॥
कोई हो आजाद सुखी है, कोई दुखी अपार,
कोई गायन मस्त, किसी के बहे अश्रु की धार। बना है ॥२॥
कोई मंगल सजैं, किसी का होता है संहार,
श्री हरि कृपा बिना माया का, पाया किसने पार? बना है ॥३॥

(प्रस्तावना पूर्ण)

अंक प्रथम

दृश्य पहला

स्थान—बाजार

(दीन हीन भेष में १०–१५ भिखारियों का आना जाना, भूखे भूखे चिल्लाना सर्दी से ठिठूरने का कारुणिक दृश्य)

(एक भिखारिन गोद में बच्चे को लिये बैठी है एक दम्पति का सामने से निकलना)

भिखारिन—बाबू ! यह बच्चा कई दिनों से भूखा है, इस पर दया कीजिये—रहम कीजिये—भगवान आपका भला करेगा।

(दम्पति का उसकी ओर देखकर चल देना भिखारिन का पीछे २ उठकर चलना)

भिखारिन—बाबू क्या सुनाई होगी ?

आगन्तुक—चलदूर हट—क्या हम तेरे लिए खाना लेकर चले हैं ? (आगन्तुक की पत्नी का एक टक भिकारिन की ओर देखना)।

आगन्तुक—चलो न देखती क्या हो ? (रुकना)

भिखारिन—(बच्चे को सौंपते हुए) यह अभागिन के घर का टिम टिमाता हुआ दीपक है। यदि यह मेरे

पास रहेगा तो तड़प तड़प कर बुझ जावेगा, लीजिये आप इसे ही लेते जाइये।

आगन्तुक स्त्री—तुम कौन जाति हो ?

भिखारिन—मां ! मैं चमार जाति में पैदा हुई हूँ।

(दम्पति का चलदेना)

लेकिन मेरे घर वाले मिल में काम करते थे (बैठकर) हे भगवान् क्या जाति भी हमें जिन्दा नहीं रहने देती (आंसू बहाते हुए) अरे ! अभागे ! तूने मेरी गोदी भरने से पहलेमेरी जाति नहीं पूछी (रोना) (आलूवाले का प्रवेश)

आलू वाला—आलू मसाले दार !

(एक सेठ का लड़के के साथ प्रवेश)

सेठ—(आलू वाले से) तेरे पे के है रे ?

आलू वाला—सेठ मेरे पास मसाले का आलू है।

सेठ—(लड़के से) लेवै है के ?

आलू वाला—आलू लज्जत दार है, देखो मजेदार है चक्खो जायके दार है। (भिखारियों का चारों तरफ आना)

सब—बाबू मुझे भी, दिलाओ, बाबू हमें भी।

सेठ—(मूंह बना) परे हट ऊपर ही चढ्यो आवै (एक से)

दूसरा भिखारी—बाबू हम भूखे हैं !

सेठ—कमा कर की कोनी खायो जावै मुफत में खावणरी आदत करली।

लड़का—(भिखारी की गठरी दिखा कर) ई पोटली में खावणन भरयो है ना पहला इणान तो खाले।

भिखारी—भैया ! इसमें कुछ भी नहीं है।

सैठ—फिर के है तो ?

(भिखारिन का पोटली खोलकर फटे चिथड़े दिखाना)

लड़का—(जेव मे हाथ डाल) लो !

(कई भिखारियों का आना व मांगना)

(सेठ आलू वाले से आलू लेकर लड़के को भिखारियों के वीच से खेंच कर आलू देना)

सेठ—खावै है ना (दोनो का खाकर पत्ते फैंकना भिखारियों का पत्तों पर टूट पड़ना)

(रमेश, डाक्टर सैय्द प्रेमी व अन्य स्वयं सेवकों का भोजन एवं कम्वल लेकर आना भिखारियों का चारों ओर से घेर लेना)

सव—वावू हमे भी दिलादो ?

रमेश—आप सव एक कतार मे वैठ जाइये ।

(भिखारियों का वैठना, सेठ का सामने आकर)

सेठ—वावू थे कांग्रेस में से आया हो के ?

रमेश—हम सेवा-समिति की ओर से आये हैं ।

सेठ—घणो चोखो काम छः विचारा कों प्राण वच जासी ।

रमेश—आप भीं कुछ चंदा जमा करा दीजिये यह तो सव का ही काम है ।

सेठ—जरूर, आप दुकान पर आवज्यो, म्हारो भी नाम वीकी लिस्ट में भरा जो, १०) रु० मैं भी देस्यूं ।

रमेश—(प्रेमी से) आप सेठ साहव का पता नोट करलें ।

(प्रेमी का पता नोट करना सेठ का लिखाना)

सेठ—चोक वाजार कजोड़ीलाल मारवाड़ी ।

प्रेमी—(लिखकर) ठीक ।

(एक अंधे भिखारी कर्मसिंह का अपनी लड़की के कंधे पर हाथ रक्खे दूसरे हाथ में लकड़ी लिये गाते हुए प्रवेश)

अन्धा व लड़की (गाना)—

कोई नहीं तेरा साथी बाबा कोई नहीं है साथी।
क्यों कहता है यह घर मेरा, दुनियां चार दिवसका डेरा,
जैसी करनी वैसी भरनी करनी एक सँगाथी।
बाबा कोई नहीं है साथी।
कोई नहीं तेरा साथी, बाबा कोई नहीं है साथी।

रमेश—(दोनों की ओर देख कर) बाबा यहां बैठ जाइये !

सैयद—(उठाकर लकड़ी पकड़ कर ऊंचे स्थान पर बिठाकर) आप यहां बैठिये बाबा आप अब अपना वही गाना शुरू करिये।

दोनों—कोई नहीं है साथी !!

कोई नहीं तेरा साथी, बाबा कोई नहीं है साथी।
निश्चय जाना छोड़ बसेरा,
फिर भी होगा सांझ सवेरा,
धरी रहे तेरी थाथी, बाबा कोई नहीं है साथी।
राम गुरू रहमान वही है,
ईशा की भी शान वही है,
गुरू-मठ, मंदिर, मस्जिद, गिरिजा,
सब का सरजन हार वही है,
इक आता इक जाती बाबा, कोई नहीं है साथी।

सब—खूब, खूब, बहुत अच्छा बाबा क्या ही सुन्दर है आपका भजन।

(अंधेका सर्दी से थर-थर कांपना)

प्रेमी—(भोजन देता हुआ) बाबा लो पहले भोजन करलो।

अरुणा—बाबू भोजन से पहले पिताजी को कम्बल दीजिये।

रमेश—(कम्बल उठाकर) यह लो कम्बल (कंबल देना)

(प्रेमी का अन्य भिखारियों को भोजन बांटना)

बुढ़ा—हा ! प्रभू तुम्हारा भला करे (अरुणा की ओर) अरुणा तुम्हें भी मिला ?

अरुणा—(मुस्करा कर) मिल जायगा।

बूढ़ा—कुछ खाने को भी मिलेगा ?

अरुणा—मिलेगा पिताजी।

(प्रेमी का भोजन देना)

बूढ़ा—तुम्हारा भला हो !

(रमेश सबको कम्बल देकर)

रमेश—आप सब लोग गौरी—घाट पर चलिये वहां झोंपड़ियें तयार हैं। एक एक परिवार एक एक झोंपडी ले लेवें।

(आगे आगे अंधा उसकी लड़की व पीछे पीछे अन्य भिखारियों का गाते हुय जाना)

कोई नहीं है साथी,
बाबा कोई नहीं तेरा साथी।

॥ पटा क्षेप ॥



दूसरा दृश्य

स्थान—पं० दुर्गा दत्त के मकान का एक कमरा-[जिसमें सोफा रेडियो व अन्य उपस्करण] (पं० दुर्गादत्त आराम कुर्सी पर बैठे हुए हुक्का पी रहे हैं। राय बहादुर महेश का आकर पिता के चरण छूना)

महेश—पिताजी प्रणाम !

दुर्गा दत्त—कौन महेश ! प्रसन्न रहो बेटा, मैं तेरे से प्रसन्न हूं। तुमने बुढ़ापे में मेरी आत्मा को बड़ी सान्त्वना दी है इस से मुझे सुरेश का स्मरण भी नहीं होता है किन्तु तुम्हारी कल की बातों से मैं बहुत दुःखी हूं और मैं चाहता हूं न रमेश मुझे मुंह दिखावे न कलंकिनी सुरेश की पत्नी शान्ति ही अपना काला मुँह लेकर सामने आवे। बेटा इन्होंने तो इस बुढ़ापे में मेरे सफेद बालों पर धूल डाल दी। हाँ यह तो बताओ मैंने जो चार चार हज़ार रुपया तुम लोगों को दिया था, वह उन दोनों के पास गया या तुम्हारे ही पास रक्खा है ?

महेश—पिताजी रुपये उसी समय उन लोगों ने अपने अपने ले लिये। हाँ, भाभी के रुपये मालूम नहीं रमेश के पास हैं या उसके स्वयं के पास। रमेश ने अपने रुपये से सेवा समिति खोली है।

दुर्गा दत्त—क्या सेवा समिति खोली है ? ओफ ! गजब हो गया, अगर मैं तुम लोंगो को नहीं बांटता तो मेरी गाढ़ी कमाई

का पैसा इस प्रकार क्यों पानी की तरह बहाया जाता खैर बेटा यह बतलाओ उस कलंकिनी का काला मुंह कैसे होगा ?

महेश—हाँ उसकी तो तैयारी मैंने करली है किन्तु खर्चे को आवश्यकता है।

(रमेश की मा का प्रवेश)

दुर्गा दत्त—रुपये जितने चाहें तुम्हारी मा से लेलो। और उस चुडेल को निकाल दो जिस से वे मेरे घर को भ्रष्ट नहीं कर सके (महेश की मा की ओर) महेश को २०० रुपये देदो (वह जानना चाहती है) और सुनो तो वह वसियतनामा ले आओ मैं अब सब चल अचल संपति महेश के नाम किये देता हूं।

महेश की मा—बेटा ! तुम उसे कहां भेज रहे हो, अब तो मैं पड़ोसिनियों की बातें सुनते सुनते तंग आगई हूं।

महेश—माताजी मैं उसे विधवा आश्रम में भेज रहा हूं।

महेश की मां—नहीं नहीं बेटा कहीं ऐसा गजब नहीं कर देना, विधवा आश्रम में जाने से नाम निकलता है। चाहे वह मर जावे या कोई दूर परे लेजावे।

दुर्गादत्त—महेश तुम भोले हो मैंने जमाना देखा है विधवा आश्रम गुंडों का अखाड़ा है। वहां भले आदमियों की इज्जत खराब करने के लिये उनकी वहू बेटियों का पुनर्विवाह करवा देते हैं।

महेश—तो ठीक है मैं इसका दूसरा उपाय करूंगा, आप उस की बिल्कुल चिन्ता नहीं करें।

महेश की मां—बेटा महेश ! अब तुम मेरा कहना भी मानो ! वहू रानी को दो साल हो गये अब तो अपना लगन कहीं ओड़ बडी लडकी देख कर करलो। बेटा बताओ तो मैं अब इस घर में अकेली कैसे रहूंगी।

महेश—माताजी पहले इस बन्धन से छुट्टी पाने दो फिर जैसा आप कहोगी वैसा करूंगा । मेरे मित्र रमेश ने सारे कार्य को ठीक करने का भार उठा लिया है । मैं उसके साथ शान्ति को गंगा स्नान के बहाने से भेज देता हूं ।

॥ पटाक्षेप ॥



दृश्य तीसरा

स्थान—बद्रीनारायन खन्ना का मकान

[बी. डी. खन्ना चाय पीरहे हैं]

(सुमेर का बाहर से आवाज लगाना)

सुमेर—खन्ना साहब !

खन्ना—आइये,आइये,जनाब अन्दर आइये। (सुमेर का प्रवेश)

सुमेर—नमस्ते (चंपा की ओर देख) जो है सो आप भाभी जी है ?

खन्ना—(चाय का कप रख कर) जी हां (चंपा से) एक कप सुमेर को।

सुमेर—(कुर्सी पर बैठता हुआ) भाभी जी नमस्ते (चंपा का प्रस्थान) जो हैं सो दादा भाभी तो बिल्कुल सीधी है।

खन्ना—(चाय पीते हुये) मैं कौनसा टेडा हूं।

सुमेर—किन्तु इनमें और आप में तो जो है सो गधे-घोड़े का फर्क है।

खन्ना—क्या इस प्रकार फर्क देखने की तुम्हारे पास कोई घड़ी है ?

सुमेर—दादा मैं घास नहीं चरता जो है सो अनाज खाता हूं; भाभी जी से नमस्ते जब मैंने किया तो जो है सो अक्ल की माप-घड़ी की सूई घोड़े से गधे पर आगई।

खन्ना—ठीक ! बात तो आपने तोला पाव रत्ती ठीक है (हँस कर) लेकिन भैया मैं इसे अब अपने सांचे में ढालने की फिक्र में हूँ।

कुबेर—(मुँह बना कर) सांचे में, अच्छा, किन्तु जनाब सांचा कहीं अपने आप भी ढल सकता है जो है सो इसके लिये तो चतुर लोहार की आवश्यकता है लोहार की।

खन्ना—फिर आप से सलाह किस बात की ली जा रही है आप ही बतलाइये इसके योग्य कोई लोहार।

कुबेर—जो है सो आपके मन गुण सिखाये जायेंगे ?

खन्ना—मेरे गुणों से क्या मतलब, इसे सिखाया जायगा गाना—बजाना और तहजीब।

कुबेर—(चाय पीते हुए) आपकी इच्छा जो है सो गाना, बजाना व तहज़ीब सिखाने की है ?

खन्ना—जी हाँ (चाय पीता हुआ)

कुबेर—जो है सो मेरे ख्याल से शास्त्रों के अनुसार आपको एक उत्तम सलाह देता हूँ।

खन्ना—वह क्या ?

कुबेर—देखिये ! शास्त्र का कथन है "वारांगना वास गृहे निवास" भाभी जी को केवल एक मास के लिये किसी रण्डी के मकान पर छोड़दें।

खन्ना—(खड़ा होकर मारता हुआ) बदमाश ! होश सँभाल कर बात नहीं करता (कुबेर का कुर्सी से गिरना) कहीं तूने आज पी तो नहीं रक्खी है (बैठता है कुबेर भी टोपी सम्भाल उठता है)

सुमेर—(हंसता हुआ) जनाव जो है सो मैंने अपने मन से तो नहीं कहा, पंडितों की राय से कहा था और आपने भी उन्हीं से सब कुछ सीखा है खैर आपकी इच्छा।

खन्ना—धत्त‍ेरी पागल, गृहस्थ कहीं कोई अपनी स्त्री को रंडियों के यहां रख सकता है, तुमतो कोई ऐसा मास्टर वताओ जो गाने वजाने के अलावा कुछ अंग्रेजी भी पढ़ा सके।

सुमेर—(सिगार चासकर) तो खन्ना साहव अव मैं समझा ऐसा सर्व गुण संपन्न मास्टर जो है सो इस शहर में तो क्या हिन्दुस्तान में एक ही है।

खन्ना—(सिगार चासकर) वस उसे ही तो वतलाओ (चंपा की ओर) सुमेर तुम्हारे लिए मास्टर का प्रवन्ध कर रहा है।

चंपा—तो क्या मुझे अव मास्टरनी वनना होगा ?

सुमेर—नहीं नहीं मास्टर को मास्टरनी नहीं वनानी जो है सो खन्ना साहव की ही पक्की वीवी वनानी होगी।

चम्पा—(सुमेर की ओर मुंह वनाकर) तो क्या अभी मैं कच्ची वीवी हूं ?

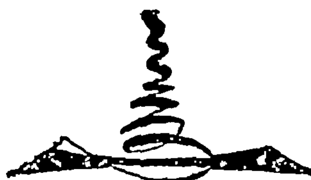
सुमेर—(हंसता हुआ) भाभी जो है सो तुमतो नाराज होगई, दादा खन्ना आज कल की दुनियां के फेरमें हैं, समझी, यही कारण है जो है सो आपको भी इनके माफिक वनने के लिए गाना, वजाना व तहजीव सीखना होगा।

चंपा—यह तो ठीक है गाने का शोक तो मुझको भी है परन्तु मास्टर मेरी सलाह के वगैर नहीं रक्खा जासकेगा।

एक मनी वेग लटका कर, ऊंची एडी के स्लीपर
तुम साईकिल ले शिर से फिरो उघारी वनजा०
होटों को लाल वनालो, पाउडर से गाल सजालो
तुम जारजट की टेडी पहनो सारी। वन जावो
(खड़ा हो पैर रखकर) यों पैर धरो ठुम का कर,
मुंह खोलो आंख चलाकर
आने जाने वालों की करो जुहारी
वन जाओ आज करारी।

खन्ना—(हंसकर) खूब खूब
चम्पा—(हंसना)

॥ पटा क्षेप ॥



मुरारी आज किसने तुम्हे स्नान कराया होगा, किसने तुम्हारी पूजा की होगी; किसने भोग लगाया होगा (ऊपर देख) आओ द्रोपदी के अपमान का गिन गिन कर वदला लेने वाले कन्हैया क्या मैं भारत की अवला नहीं ! सुदर्शनधारी आओ ! तुम्हारी पुजारिन को नराधमो ने कलंकिनी वना कर निकाल दिया है ! (नीचा शिरकर)………………(शिर उठा) नहीं आये प्रभो क्या तुम भी मुझ को पतिता समझते हो (गिरना) (एक मोल्लवी का मस्जिद से निकल कर देखना) (ऊपर सिर उठाती हुई) आये ! आये !! मेरे भगवान् (उठ कर) ठहरो मैं वहीं आरही हूं (कुए की तरफ वढ़कर) इस कलंकिनी के लिये आपको यहां बुलाने का कष्ट नहीं दूंगी (वढ़ती हुई) आई मैं ही आई मेरे कृष्ण कन्हाई (कूवें में पड़ना चाहती है मोलवी दोड़कर पीछे से पकडता है)।

मुल्ला—अल्लाह !

शान्ति—(चौंक कर) कौन पापी खला (दूर खड़ी होकर) हैं तुम कौन हो ?

मुल्ला—तू कौन है जो कूवे मे गिरकर इसको नापाक वनाना चाहती है ?

शान्ति—नहीं मैं कुवे को नापाक नहीं वनाना चाहती वावा मैं तो अपने भगवान् के पास जाना चाहती हूं (घुटने टेक) वताओ वावा मेरे कन्हाई को वताओ वे कहां हैं ?

मुला—तू वडी पगली है कहीं कूवे में भगवान् मिलेगा ? सच वतलाओ तुम किसकी वीवी हो ? कहां रहती हो ?

शान्ति—वावा ! मुझसे यह सव कुछ न पूछो मैं इस पृथ्वी पर रहती हूं मेरा पति भगवान् के सिवा दूसरा कोई नहीं। मुझको एक वार तुम उससे मिलादो वावा !

मुल्ला—वीवी आओ मेरे साथ चलो तुम्हें भगवान से मिलने का रास्ता वतलाता हूं।

शान्ति—(पैरों पर गिर कर) वावा कहां है, वताओ मेरे कन्हाई कहां हैं ?

मुल्ला—वीवी भगवान कभी खुदकसी करने पर नही मिलता वह तो इवादत करने से सामने आता है। उससे मिलने के लिये उसकी तुमको इवादत करना चाहिये।

शान्ति—वावा ! इवादत क्या ?

मुल्ला—इवादत प्रार्थना को कहते हैं पर तुम इसे कर नहीं सकती, तुम अभी नादान हो तुम्हे तो किसी से निकाह करके आराम से रहना चाहिये।

शान्ति—वावा मैं निकाह नहीं करूंगी ! मेरे भाग्य में अकेली ही रहना वदा है मुझे तो आप कहीं अकेली ही छोड़ दें मैं वहीं मेरे साथी भगवान् के साथ रहूंगी।

मुल्ला—खैर चलो (गमन)

॥ पटा क्षेप ॥



दृश्य पांचवां

स्थान—गौरी घांट की एक झोंपड़ी।

[साधारण चारपाई पर लेटा हुआ अरुणा का पिता(कर्मसिंह) मेजपर दवा]

(वृद्ध कराह रहा है अरुणा पैर सहला रही है)

कर्मसिंह—अरुणा क्या मेरे इन्द्र देव नहीं आये ?

अरुणा—पिताजी नहीं आये (साड़ी से आंसू पोंछना)

कर्मसिंह—भगवान्! मेरे इन्द्र देव को शीघ्र भेजो उसका गोरा मुह अन्तिम-बार दिखा दो।

अरुणा—(रोती हुई) पिताजी आप क्या कह रहे हैं ?

कर्मसिंह—बेटी तेरा पिता बड़ा अभागा है; जन्म ही से तुझे सुख नहीं दे सका। बेटो यह मेरा विश्वास है कि इस पापी शरीर के भस्म होने बाद ही तुझे सुख मिलेगा।

अरुणा—पिताजी! पिताजी!! (रोकर) ऐसा न कहिये पिताजी।

कर्मसिंह—यह ठीक ही है बेटी इस पापी के घर जन्म लेने का ही परिणाम है जन्म से ही माता का विछोह हुआ और घरसे भी आज अलग होना पड़ा।

अरुणा—पिताजी मैं अकेली नहीं रहूंगी आप मुझे अकेली न छोड़ें। अपनी प्यारी बेटी को अकेली छोड़ना क्या आप के लिए उचित है पिताजी ?

कर्मसिंह—पढ़ी-लिखी होकर क्या बातें करती हो बेटी अकेला कौन है ? फिर भी मैं तुमको अकेली नहीं छोड़ूंगा बेटी।

अरुणा—पिताजी ! पिताजी !! आप चाहे यों ही लेटे रहें मैं आपकी सेवा करती रहूंगी।

(रमेश का डाक्टर सैयद के साथ प्रवेश)

कर्मसिंह—कौन ? मेरे इन्द्र देव।

रमेश—हाँ मैं हूं रमेश ! कहिये आपकी तबियत कैसे रही।

कर्मसिंह—(बनावटी हंसी) मेरे इन्द्र देव तबियत ठीक होने वाली ही है।

(डाक्टर सैयद देखता है)

रमेश—मेरे मित्र डा० सैयद आपको देख रहे हैं।

डा० सैयद—रमेश हार्ट बहोत वीक होगया है।

रमेश—फिर इसके लिये क्या उपाय किया जाय।

डा० सैयद— अच्छा मैं एक इञ्जेक्सन दिये देता हूं।

रमेश—(अरुणा से) आप गरम पानी करें।

(अरुणा का पानी मय सिगड़ी के लाना इञ्जेक्सन देना)

कर्मसिंह—भगवान् तुम्हारा भला करे मेरे इन्द्र देव यह सब तब सफल हो सकता है जब दीपक में तेल हो।

रमेश—अब आपकी तबियत कैसी रही !

कर्मसिंह—कुछ ठीक पर सुनो........................

रमेश—कहिये।

कर्मसिंह—कहने की हिम्मत नहीं और समय जारहा है।

रमेश—फिर भी।

कर्मसिंह—क्या मुझे आज्ञा है कि मैं कुछ आपसे प्रार्थना करदूं; क्या मेरी प्रार्थना स्वीकार होगी?

रमेश—मैं आपकी आज्ञा अवश्य पालन करूंगा।

कर्मसिंह—(अरुणा का हाथ पकड़) आपका हाथ लावें (रमेश का हाथ देना) (अरुणा का हाथ उस पर रख) मैं अपनी धरोहर अपना सर्वस्व बेटी अरुणा....आ....पके....अर्पण....करता हूं

(हिचकी आना, अरुणा का रोना, सब का देखना)

रमेश—डाक्टर! डाक्टर!!

॥ पटाक्षेप ॥



दृश्य छठा

स्थान—दुर्गादत्त का मकान

(पती हुक्का पी रहे हैं पत्नी सामने बैठी बाते कर रही है)

दुर्गादत्त—महेशकी मा तुम मेरे सामने रमेश का नाम कभी भी मतलो, रमेश एक आवारा लड़का है जैसे सुरेश मर गया वैसे मेरे लिये वह भी मर गया।

राजेश्वरी—हां ! क्या कह रहे हैं। जबान समालें; मेरे कलेजे का टुकड़ा रमेश भी है इसी लिए दुखी होती हूं कि मैंने कई दिन से रमेश को नहीं देखा।

दुर्गादत्त—मूर्खा ! तेरा लड़का एक ही है और वह है महेश सो कुपुत्रो से एक सुपुत्र अच्छा होता है।

राजेश्वरी—यह ठीक है रमेश कुपुत्र होने पर भी मेरे दिल से अलग नहीं हो सकता। पुत्र कुपुत्र हो जाता है किन्तु माता कुमाता नहीं होती।

दुर्गादत्त—देख सुन, जब से उसने एक चमारकी लड़की से प्रेम कर विवाह का निश्चय किया है तब से तो मुझे उससे ऐसी घृणा हो गई है कि उस बदमाश का मुंह स्वप्न में भी देखना..............................

(सामने देख चुप होना रमेश का प्रवेश)

(प्रथम माताजी के पुनः पिताजी के पैर छूना)

दुर्गादत्त—छीः छीः धूर्त मुझे छू लिया ! स्नान करना होगा।

रमेश—पिताजी यह आपका पुत्र है रमेश (बैठना)

दुर्गादत्त—मूर्ख मैंने १५ दिन पहले पत्रों में निकलवा दिया है कि रमेश से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। फिर पुत्र कैसा ?

रमेश—पिताजी ! पत्रों का असर आप की संपति पर हो सकता है, आप की संपत्ति का अधिकारी रमेश नहीं रहा किन्तु रमेश का शरीर आपका है इसको पत्र क्या ? कोई भी नहीं मिटा सकता।

दुर्गादत्त—धूर्त, पाखण्डी चमार की लड़की से विवाह करने का निश्चय क्या कोई ब्राह्मण पुत्र कर सकता है ?

रमेश—पिताजी शास्त्रों ने स्त्रियों की जाति भिन्न मानी है यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति को हरवर्ण की लड़की से विवाह करने का पूर्ण अधिकार है फिर मैं कौनसा अनर्थ करने जा रहा हूं।

दुर्गादत्त—रमेश तू बड़ा वाचाल हो गया है। मैं नहीं समझता तूने यह विद्या किस से सीखी है सच बतला तैंने ४ हजार रुपये का क्या किया ?

रमेश—पिताजी लाखों प्राणियों की प्राण रक्षा के लिये एक अक्षय वृक्ष लगा दिया उसके मूल को मैंने आपकी शुभ संपति सुधा की धार से सींचा है।

दुर्गादत्त—बदमाश ! तूंने इससे भी भारी कलंक ऐसा लगाया है कि मैं उसे जन्म जन्मान्तर तक नहीं भूल सकता।

रमेश—पिताजी रमेश अपनी जान में कोई ऐसा कार्य नहीं करता जिससे आपको कलंक लगे।

राजेश्वरी—(रमेश को सीने से लगा कर) वस अब इसे कुछ नकहें, बेटा, तू कहां रहता है ? क्या खाता है ? कहां सोता है ? क्या तुझे अपनी मां की भी याद नहीं आती ?

रमेश—मां ! तुम मेरे लिए स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हो। भला मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूं। माताजी मैं आपके आशिर्वाद से सर्वदा हर स्थान पर प्रसन्न रहता हूं।

रामेश्वरी—कभी कभी तो घर की भी सुध लिया कर बेटा।

रमेश—मां घर के अन्दर आपको सेवाके लिए भाई साहब हैं। मुझे जन्मभूमि की सेवा के ही लिये आपने पैदा किया है। एक घर की २ संतानों में दोनों का कर्तव्य यही हो जाता है। हां मां भाभी नजर नहीं आती वे कहां गई हैं ?

दुर्गादत्त—धूर्त तेरे कर्तव्य का फल भोगने।

रामेश्वरी—(बात काटकर) बेटा खन्ना के साथ गंगा स्नान को भेज दिया है उसकी कई दिनों से इच्छा थी।

(सेवक का प्रवेश दुर्गादत्त प्रस्थान)

सेवक—रमेश बाबू-गजब हो गया (रोना)

रमेश—(घबड़ाकर खड़ा हो कर) क्या हुआ ?

सेवक—डाक्टर सैयद को पुलिस हथकड़ी डाल कर ले जा रही है आप जल्दी चलो (सामने देखकर) लो वे यहीं आ रहे हैं ?

(डाक्टर को लिये थानेदार का प्रवेश)

रमेश—क्या कारण है कि राजनैतिक वन्दी के भी आप हथड़ी डालते हैं ?

इन्सपेक्टर—श्रीमान् हुकूमत के प्रति वर्ग लाने वाले राजनैतिक नहीं होते कृपा कर आप भी अपने हाथ इधर करदें (हथकड़ी निकाल) आपका भी वारैंट है (वारंट दिखाता हुआ)

रमेश—भाई मैं तो २४ घंटे तयार रहता हूं (स्वगत) भक्तों की परीक्षा प्रभू हर समय कठिन से कठिन लेता है ?

(थानेदार के रमेश को हथकडी डालने पर राजेश्वरी का चिल्लाना)

रजेश्वरी—यह क्या वात है मेरे वेटे ने क्या अपराध किया है (रमेश को पकड़ कर) तुम मतजाओ मुझे जाने दो वेटा ।

(दुर्गादत्त का प्रवेश)

दुर्गादत्त—(औरत को पकड़कर) जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा; तू क्यों मरती है ?

रमेश—(घुटने टेक) मां मुझे आशिर्वाद दो ।

राजेश्वरी—(रोकर) वेटा (सर पर हाथ रख कर)

(सव का प्रस्थान)

(राजेश्वरी का वेहोश होकर गिरना)

॥ पटा क्षेप ॥



दृश्य सातवां

स्थान—खन्ना का मकान।

[पानदान, पीकदान, सतरंज, तास तवले आदि रक्खे हैं]

(चंपा कुर्सी पर बैठ मेज पर रक्खे बाजे को बजाती व गाती है)

गीत

मत मारो यार नजरियाँ, मैं छैल-छबीली नारी रे।
एक नजर से चीरा सीना,
खून की एक भी बूंद गिरा ना।
निर्दयी सैंया दिलको छीना; कैसी अनोखी कटारी रे।
मैं अल बेली भोली-भाली, कच्ची कलियां हूं मैं आली
माली मत छू मेरी डाली, झूमन दे मतवारी रे। मत मारो

(सुमेर का प्रवेश चंपा का चौंक कर देखना)

सुमेर—वाह वाह क्या कहना, आज तो जो है सो इन्द्र की अपसरा को भी मात............चुप क्यों हो गई भाभी।

चंपा—चल् पागल क्या बकते हो अच्छा तवले सम्भालो।

सुमेर—(चम्पा का हाथ पकड) पहले यह बतलाओ बाबू कहां गये हैं।

चंपा—क्या पूछते हो उनका कुछ भी पता नहीं, कभी सप्लाई में कभी गवर्नर की कोठी, कभी दोस्तों में मैं तो आजकल विना बाबू की हो रही हूं।

सुमेर—विना बाबू की जो है सो बाप रे बाप सुमेर की मोजूदगी मे।

चंपा—धत् पागल क्या बकता है?

सुमेर—नहीं भाभी मैंने तो यह कहा है कि गवर्नर की कोठी कबसे च्यो है सो कहां मखमली लंहगा और कहां चटाई की मगजी।

चंपा—बहुत दिन हुए कब से का क्या काम।

सुमेर—जो है सो बद्री बाबू की आटे वाली चक्की कहां गई जो है सो उसको अब मुझ को ही दे दो।

चंपा—क्या बकते हो, राय सहाब कहो; चक्की गई भाड में।

सुमेर—जो है सो भाड़ का मुँह बहोत बड़ा होगा मुझको अब समझमे पूरा बावन तोला पावरत्ती आगया मालूम होता है भाड़ मे पकने बाद चक्की से मोटर बन गई, लेकिन उस घर का यह बंगला कैसे बना जरा तकलीफ़ करके यह और बता दो।

चंपा—धत्तेरी पागल अरे! बाबू आज कल सप्लाई कमिश्नर है इसलिए अपने यहां आज कमी किसकी है?

सुमेर—तो जो है सों क्या आपकी सप्लाई.......

चंपा—(बात काट कर) मालूम होता है तुम्हारा दीमाग खराब हो गया। खाने पहनने के सामान की सप्लाई! अब तुम तो यह बतलाओ कि अब तक तुम कहां रहे?

सुमेर—मैं।

चंपा—हां तुम।

सुमेर—तुम्हें वतला दूं जो है सो तुम वावू से न कहने का पहले वादा करो।

चंपा—अरे साहव राय वावू कहा करो राय वावू।

सुमेर—अच्छा वावा रायवावू सही, रायवावू को नहीं कहो तो कहूं; समझे।

चंपा—न कहने की ऐसी कौन सी वात है? नहीं कहने की हुई तो नहीं कहूंगी।

सुमेर— तो लो सुनो (कान में इधर उधर देखकर) जो है सो कोई है तो नहीं?

चंपा—कहोना यहां कोई नहीं है।

सुमेर—एक दिन वावू ने कहा "सुमेर तुमको १००) का नौकर करा दिया है किन्तु तुमको लड़ाई में जाना होगा," मैंने कहा "अगर नहीं जाऊ" वावू वोले तो "जेल जाना होगा।"

चंपा—फिर क्या हुआ।

सुमेर—होना क्या था मैं रहा सुमेर चंपारानी का गुरू, मैंने कहावावू प्रथम तो लड़ाई में मरना सवाव, दूसरे मालिक वादशाह का काम तीसरे दोस्त की आज्ञा, भला ऐसा दिन कव आ सकता है मुझे १० विस्वा मंजूर है? वावू वोले "और १० विस्वा वाकी नामंजूर" मैंने कहा विस्वा १० होते है या वीस "वावूने कहा २०" मैंने कहा वह भी सही।

चंपा—फिर।

सुमेर—फिर क्या? मैंने कहा वावू आज मेरी साली के लीजा की वहू का विवाह है उस में जीमकर कल से जो है सो नौकरी पर चला जाऊंगा।

चंपा—हैं साली के जीजा की वहू; क्या तुम्हारी वहू ?

सुमेर—जी ! शायद ?

चंपा— हां ! हां !! हां !!! (हंसना) अच्छा यह वता ओ फिर गये कहां तुम तो घर भी तो नहीं मिले ?

सुमेर—घर पर मुझे जो है सो छोडता कौन ?

चंपा—फिर कहां जाकर मरे ?

सुमेर—मैं ।

चंपा—हाँ तुम नहीं तो क्या मैं ।

सुमेर—जो है सो मैंने अपनी औरत के रांड होने वाद मरना वेकार समझा ।

चंपा—धत् पागल तेरे होते हुए रांड कैसी ?

सुमेर—"सदा सुहागिन रंडी जैसी" ।

चंपा—अरे तू गया कहां ।

सुमेर—यह नहीं वतलाऊंगा ।

चंपा—(मुंह वनाकर) यही तो वताना होगा ।

सुमेर—मैं........अच्छा....देखो कहना नहीं ! मैं एक रंडी के यहां जो है सो नहीं नहीं वाई जी साहव के रहने लगा, औ...र वहां भी ठीक आज की तरह तवले पर जो है सो थप्पी लगाने लगा ।

चंपा—धत् तेरी आज की तरह कहता है अच्छा यह वतलाइये यहां आज आप कैसे आ धमके ।

सुमेर—अव आप जो है सो आधमकने का हाल सुनलें । मैंने सुना अव तो खतम होगई है लड़ाई और वावू के साथ

अब हम भी सप्लाई पर करेंगे चढाई, बाबू को भी मेरे जैसे ही सूर-वीरों की आज जरूरत जरूर आई; समझे जनाब।

चंपा—जी जनाब की बच्चीजी उस समय तो बाबू का कहना नहीं माना और रंडियों के जा छिये; अब बतलाइये बाबू आपको रखसकेंगे ?

सुमेर—जो है सो गुरू सुमेर को जनाब की बच्ची कहना शराफत का किनारा है ! खैर गुरू गुड रहे चेली चीनी बनगई अब सुनो मुझे लडाई में भी हाथ चलाने पडते और उस घर में भी तबले पर हाथ मारने पड़े। जो है सो फिर मुझे विश्वाश है कि आपके होते मुझे बाबू रखने के लिए इन्कार कभी नहीं कर सकते ?

चंपा—अच्छा छोडो इन बातों को तबला पकड़ो।

(राय खन्ना का प्रवेश)

राय खन्ना—चंपा बडी मुसीबत आने वाली है ?

(पसीने पोंछना)

चंपा—आफत क्या है आप घबरा क्यों रहे हैं।

(खडी होकर)

राय—सब गुड़ गोबर होगया।

सुमेर—जो है सो शक्कर से काम चलाइयेगा।

राय—चुप रह बेवकूफ !

चंपा—मामला क्या है ?

(तोलियं से राय के पसीने पोंछ कर)

खन्ना—मामला क्या बतलाऊं रमेश व डाक्टर वगहरा जेल से छूटने वाले हैं क्यों कि जनताका आन्दोलन जोर पकड़

गया दो दिन से हमने हड़ताल खुलावाने का प्रयत्न किया लेकिन निस्फल रहे ।

चंपा - मुझे समझ में नहीं आता आपको इसमें कष्ट क्यों होता है ?

राय खन्ना—अरे पागल यह लोग जनता को उल्टा सीधा समझाकर बगावत करते रहते है।

चंपा—तो आप जनता को इतनी समझदार बनाइये कि ये सीधा ही समझे उलटा नहीं।

खन्ना—यह लोग मेरे पर भी तो कम कीचड़ नहीं उछालते

सुमेर—जो है सो पहले देखले (खड़ा होकर) कीचड से कहीं कपड़े तो नहीं खराब होगये ?

राय खन्ना—निकल ! बत्तमीज चुप नहीं रहा जाता।

सुमेर—आप इनसे कुछ नहीं कहते मुझसे अकड़ते है कुम्हार जो है सो कुम्हारी से जीते नहीं और गधे के कान पकड़े।"

राय—चंपा यह सच है कि वे आज छूट गये तो सप्लाई कमिश्नर रहने में मुझे खतरा है।

चंपा—सचाई से काम करने वालों को कहीं खतरा नहीं है।

राय—(मुंह बिगाड़ हाथ जोड) अरे देवी आगे तो जो कुछ करूंगा सचाई से ही करूंगा पीछे का क्या होगा।

सुमेर—(स्वगत) हैं बीबी से हाथ जोडते है ठीक "यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" (राय से) दादा कुछ नहीं होगा वे लोग फिर अकडेगें तो वापिस जेल में भिजवादूँगा।

चंपा—सब अच्छा ही होगा(शराव बोतल से प्याले मे भर कर) लीजिये थोड़ा ड्रिंक करिये ।

राय—(पीकर घूमता हुआ सुमेर से) कहो सुमेर बहुत दिनों में नजर आये ।

चंपा—सुनिये ! मेरे समझ में एक बात आई है आप कहें तो कहदूं ।

राय खन्ना—कहोना क्या बात है ?

चंपा—यदि कोई मुसीबत भी आवे तो आप सारी चल अचल संपति मेरे नामकरादें, मै आपकी हूं ही, मेरे खयाल में आपको इसमे कोई आपति नहीं होगी ।

सुमेर—वाह वाह जो हैसो यही तो बुद्धि मानी है ? मिसेज खन्ना बड़ी सयानी है ।

राय खन्ना—चंपा यह सब आज ही होना चाहिये सुमेर कागज लाओ ।

सुमेर— जो है सो भाग्य लिखा सो टरतन टारे ।

(कागज लाकर देना)

(खन्ना का लिखकर)

खन्ना सुमेर इसकी सब कार्य वाही आज ही करो !

सुमेर—जो आज्ञा दादा जो है सो आपकी आंखेही ठिकाने अब आई है ।

राय—(हंसकर) अच्छा ।

चंपा—(शरावमे घूमती हुई राय की दाडी के हाथ लगादेती है)

गाना—राय हमारे प्यारे प्यारे ।

गोरे गाल मनोहर मुखडा,नयन वने मतवारे। राय....

राय खन्ना–भोली–भाली मोहनी मूरत,
आंखे निशि–दिन इनको घूरत,
नयन तुम्हारे कजरा वारे।

चंपा—राय हमारे प्यारे प्यारे।
मेरे प्यारेप्रियतम के मैं लिपट हिये लगजाऊं।

राय—चंद्र-चादनी सम हिल-मिल के, नूतन खेल खिलाउं;
कभी न हों हम न्यारे न्यारे।

चंपा—राय हमारे प्यारे प्यारे।
आंख मिचोनी कर साजन की,
छिप-छिप खूब खिजाऊं।

राय—पकड़ हाथ सजनी का लाऊं, हिय का हार बनाऊं।
तुम पर जाऊं वारे वारे।

चंपा—राय हमारे प्यारे।

॥ पटा क्षेप ॥





अंक द्वितीय

दृश्य पहला

स्थान—शान्ति का निवास स्थान।

[एक बकरी, बदना, रहल पर कुरान]

(दाढीवाला मौलवी जहीर को पढ़ा रहा है)

मौलवी—जहीर अपनी अम्मी को बुलाओ।

जहीर—(खड़ा होकर) अम्मी ओ अम्मी !

(शान्ति का प्रवेश)

शान्ति—अस्सलामवालेकुम् मौलवी साहब।

मौलवी—वालेकुम् सलाम बीबी साहेब।

शान्ति—आपने इसे पढ़ा दिया।

मौलवी—बीबी यह लड़का बड़ा अच्छा है बहुत जल्दी कुरान शरीफ खतम करली है।

शान्ति—(जहीर से) बेटा तुमने कुरान शरीफ पढ़ लिया ?

जहीर—अम्मा पढ़लिया।

शान्ति—तुमने कुरान शरीफ में क्या समझा।

जहीर—अम्मा मैंने जो समझा आपको बतलाता हूं; खुदा एक है वही जहान को बनाने वाला सब जगह हाजिरनाजिर है वह

पाक है। पाक रहने वाले और इमान पर कायम रहने वाले व उसकी इबादत करने वाले उस के बन्दे है।

शान्ति—बेटा बिल्कुल ठीक है अब तुम्हें नापाक काफिरों को तलवार के घाट उतार पाक व ईमान वालों को जमीन पर रखना है यही तुम्हारे लिए खुदाकी इबादत होगी।

मोलवी—बीबी यह क्या कह रही हो कुरान में तलवार से पाक बनाने का मतलब मारना नहीं है ताकत से इमान पर लाना है।

शान्ति—मोलवी साहब हमे लिखे हुए के अर्थ को अपने दीमाग से समय के मुवाफिक भी सोचना है।

मोलवी—खुदा आफ़िज (खड़ा हो कान मूंद जाता है)

जहीर—अम्मी हुकुम दो आपका हुकुम मानना मेरा फर्ज है।

शान्ति—बेटा यह कटार लो (कटार देकर) और जाओ इन हिन्दू काफिरों को दुनियां से नेस्त नाबूद करदो साथ ही काञ्चिपुर के सबसे बड़े काफिर रा०ब० महेश के कलेजे के खून से इसको तर कर, मुझे लाकर दो।

जहीर—मा सबसे बड़ा कैसे ?

शान्ति उसने अपने बड़े भाई की औरत को धोका देकर उसका सब कुछ छीन लिया और उसे दुनियां में कहीं की नहीं रक्खी। फिर भी उसे संतोष जब हुआ क्रि अपने दोस्त के साथ उसे जंगल में अकेली को छुडवा दिया।

जहीर—अम्मी मैं समझगया काफिरों के बहुत बढजाने से खुदाको तकलीफ होती होगी मैं उन्हे एक एक कर सबको खतम करदूंगा।

(जोस से कटारले कर जाना चाहता है)

शान्ति—ठहरो, बेटा, सुनो !

जहीर—हुकुम !

शान्ति—अकेले नही, पहले अपना गिरोह बनाओ काफिरों को मारो, लूटो, उनके सिकञ्जे में फसी हुई अबलाओं को निकाल कर लाओ, उनके मकानो में आग लगादो और वापिस लौट आओ।

(जहीर का झुककर सलाम कर प्रस्थान)

शान्ति—मैं दोषी नहीं हूं मेरे प्रभू ! (घुटने टेक ऊपर की तरफ देखते हुये) भूल स्वीकार करके भी पापी महेश तूनेमेरे साथ विश्वास घात किया है। आज मैं तेरी औलाद के हाथ तेरे खून से रंगने बाद शान्ति का स्वास लूंगी।

(खड़ी होकर बाल बिखेर)

मैं महा शक्ति बन कर काली,
भूतल पर प्रलय मचा दूंगी ।
ले चंद्र-सूर्य दोनों कर में,
मैं पकड़ उन्हें टकरा दूंगी ।
हेमा—चल के कर खंड-खंड,
दूंगी मरोड यह विंध्या दंड ।
मैं स्वास और प्रच्छ्वासों से,
प्रलंयकर आग लगा दूंगी ।
होवेगा सागर उथल—पुथल,
थर, थर, थररा वे पृथ्वीतल ।

तारा गण कों दूंगी विखेर,
मैं नभ में आग लगा दूंगी ।
रूडी वादो के चीर रुण्ड,
जीरण समाज का काट मुण्ड।
शिवके शरीर पर उछल उछल,
मैं ताण्डव नृत्य दिखा दूंगी

॥ पटा न्तेप ॥



दृश्य दूसरा

स्थान—अरुणा का निवास गृह।

[मेज, कुर्सी, खद्दर के मेजपोस, रमेशका चित्र एक मेज पर
दूसरी पर थाली में रोटी]

(फोटो की तरफ मुंह करके सितार पर गाती हुई अरुणा)

अपने जीवन-धन पर मैं
निज-तन तिनके सम वारूँ।
आकुल-व्याकुल फिरूँ रैन-दिन
ज्यों तड़फत मछली पानी बिन।

(रमेश का चुपचाप प्रवेश)

स्वांती-बूंद पपीहा के सम इक-टक बाट निहारूँ।
तुम आओ!! पलकों में रखलूँ
प्रीत-सुधा पीकर रस चखलूँ,
मत तरसा ओ अबतो साजन चरणों में शिरडारूँ।

(शिर नीचे डारकर)

अपने जीवन धन पर मैं निज तन०

(रमेशका कंधे पर हाथ रखना)

अरुणा—(चौंक कर खड़ी होना) कौन? (देख कर नीचा शिर)

रमेश—अरुणे! तुम क्या गा रही थी।

अरुणा—(वात काट कर खड़ी हो) आप आगये ?

रमेश—हां मैं आगया (मेज पर रोटी देखकर) हैं यह इतनी मोटी रोटी कैसी ?

अरुणा—मैं अभी भोजन करने वाली ही थी [रोटी उठाना चाहती है]।

रमेश—(तोडकर खाते हुये) हूँ (थूक कर) इसमें इतनी मिट्टी ?

अरुणा—सुना है जेल में भी ऐसी ही रोटी मिलती है ?

रमेश—अरुणे जेल के वे दिन समाप्त हो गये मुझे जेल में समय पर अच्छा भोजन मिलता था (कंवल को दिखाकर) सम्भव है आप इस कम्थल पर लेटती है ?

अरुणा—जी यह अभी विछाया था। आपके लिये भोजन तैयार करूँ ?

रमेश—अरुणे ! मैं समझ गया किन्तु यह सब तुम ठीक नहीं कर रही हो क्या मुझे जनता की सेवा छोडना होगा ?

अरुणा—(घुटने टेक ऊपर देखती हुई) नहीं, कभी नहीं; अरुणा आपके शुभ मार्ग में रोडा नहीं वनना चाहती किन्तु जब मुझे आप किसी कार्य में हाथ नहीं बटाने देते तो मेरा भी तो कोई कर्तव्य है ?

रमेश—मैंने तुमारे पिता के सामने तुमको प्रसन्न रखने की प्रतिज्ञा की थी। मैं तुम को जन्म सहयोगिनी के नाते अपने कार्य क्रम में सहयोग से वञ्चित नहीं रखूंगा, किन्तु अभी तुम अवोध हो अरुणे !

अरुणा—नहीं नहीं मुझे आप अकेली हो रह.................... (शिर नीचा)

रमेश—अरुणे ! क्या कहा अकेली ही..................चुप क्यों हो गई बोलो बोलो !............

अरुणा—आपको मेरे कारण बहुत कष्ट है।

रमेश—प्रिये ! तुम पगली हो ! जन्म लेने के बाद निष्कर्मियों को ही सुख मिलता है।

अरुणा—नहीं नहीं आपको स्थान स्थान पर अपमानित होना पडता है ?

रमेश—अरुणे ! जन सेवक को पदे-पदे अपमान का सेहरा बांधना पडता है एक दिन अपमान हीं सम्मान का वितान बन कर जनता का श्रवण सुखदा बनता है।

अरुणा—यह बात नहीं आपको मेरे कारण अपने समाज से और संपत्ति से अलग होना पड़ा (नीचा शिर कर) यदि विवाह हो जावेगा तो माता-पिता के पवित्र प्रेम से भी वञ्चित होना पडेगा।

रमेश—अरुणे ! मैं मनुष्य हूं जबतक मुझमें मनुष्यता है तुमको मैं अलग नहीं करसकता और अपने भुजाओं पर विश्वास रखने वाले को सम्पति स्वयं ढूंढ लेती है प्रिये ! रमेश अर्जुन के समान कर्तव्य मार्ग पर डटा है चाहे विरोधी विरंची भी क्यों न हो।

अरुणा—(घुटनों के बल बैठ, सर रमेश के पैरों में डाल) आपकी अरुणा केवल आपके दर्शन चाहती है दर्शनों की प्यासी आपके चित्र के दर्शन कर आजन्म कुंमारी रह कर ही जीवन समाप्त कर लेगी। इतने घाटे में अछूत अरुणा को प्राप्त करना आपके लिए उचित नही होगा।

रमेश—(हाथ से अरुणा का सर उठा कर) पगली अरुणे! सत्यका पलड़ा सदा भारी रहता है उसमें घाटे का सवाल नहीं शूद्र केवल संज्ञा मात्र है भगवान की मनुष्य सृष्टि में भेद कैसे हो सकता है फिर बतला ओ अछूत और छूत कौन है ?

अरुणा—(घुटनों के बल बैठ हाथ जोड) आप ईश्वर है मुझे समझ मे नहीं आता मैं आप से क्या कहूं हृदयेश्वर या परमेश्वर ! मैं अब तक यह समझती थी कि मैं ही आपकी हूं लेकिन अब मुझे मालूम हो गया प्रभो ! आप संसार के हैं।

(बाहिर से)

"रमेश बाबू है"

रमेश—आइये प्रेमीजी (अरुणा का जाना)

(प्रेमी व डाक्टर सैयद का प्रवेश सब का बैठना)

डाक्टर—रमेश ! क्या किया जाय ? जहीर की खूंख्वारी बढ़ रही है इतना होते हुये भी खान बहादुर मोला बक्स जानते हुये अन जान बने हुये है।

रमेश—डाक्टर ! मुझे समझ मे नहीं आता आप क्यों किसी बहादुर से हिन्दू मुसल्लिम समस्या के सुलझाने में विश्वास रखते है ? यदि यह समस्या सुलझ जाती है तो यहां न खान बहादुर ही टिक सकेंगे और न राय बहादुर ही। यह समस्या अपने ही द्वारा सुलझ सकेगी।

डाक्टर—फिर देर करने से क्या फायदा विचारे अनेक बेगुनाह मौत के घाट उतारे जारहे है अनेक गरीब बिना घर बार के किये जा रहे है।

प्रेमी—मैं समझता हूं शीघ्र ही कोई योजना तयार करे ताकि हम अपना कार्य प्रारम्भ करदें।

(अरुणा चाय लाती है सब चाय पीते हैं)

(खून से तर एक व्यक्ति का रोते हुए प्रवेश)

आगन्तुक—रमेश बाबू हमारा गांव जला दिया गया, मेरे सारे कुनबे को मार दिया, मेरी औरत को न मालूम कहां लेगये, मैं भागकर उनके पंजे से निकल कर यहां तक आसका हूं बाबू (रोकर) बचाइये, हमारी औरतों को बचाइये जल्दी उठिये, उठिये (रोना)

प्रेमी—तुमने पुलिस मे इत्तलादी ?

आगन्तुक—बाबू पुलिस वाले सब जहीर से डरते हैं उन्होंने कहा भाई कांग्रेस मे जाओ।

डाक्टर—(खड़ा हो कर) बस अब सहन नहीं हो सकता, रमेश मुझे अपना पिस्तोल उठाने की इजाजत दो ?

रमेश—डाक्टर ! अहिंसा शस्त्र ही से हिंसा के शस्त्रों को परास्त कर सकते हैं। हिंसाकी होड़ से क्या सफल होना सम्भव है ! जो असत् है ?

प्रेमी—ठीक है अब हम सब को शीघ्र चल कर इस का उचित प्रबन्ध करना ही चाहिये ?

(उठकर सब जाना चाहते हैं)

रमेश—(अरुणा की ओर) अरुणे मैं अभी आरहा हूं !

अरुणा—इनकी औरतें अवश्य आनी चाहिये ?

आगन्तुक—मां बाबू हमारे परमात्मा है ? (अरुणा से)

रमेश—ईश्वर हमारा सबका रक्षक है।

(प्रस्थान)

अरुणा—(ऊपर की ओर) भगवान्! आपही स्वामी के रक्षक है। पिताजी ने कहा था "मेरे मरने वाद तुमको सुख मिलेगा वेटी" क्या इस अभागी के कारण मेरे स्वामी को भी दुःख मिल रहा है सच मुच पिताजी आप नहीं मैं ही अभागी हूँ।

॥ पटा क्षेप ॥



दृश्य तीसरा

स्थान—पं० दुर्गादत्त का मकान।

[रा० बा० महेश अपने मित्रों के साथ शराब पी रहे हैं]

(खन्ना की साली ह्वाईट्रोज नृत्य कर रही है)

गाना

मेरे नयनों में आप समाये राजा।
मेरे नयनों में आप समाये राजा।
जब से राजा मैंने सुरती सम्हाली,
तुमसे मैंने कोई नहिं पाये राजा।
मेरे नयनों में आप समाये राजा।
मस्त सी जवानी मुझको यह फ़रमावे,
दिल की कुटी में राजा आसन जमावे।
और किसी का नहीं होय इसमें साजा,
मेरे नयनो में आप समाये राजा।
सुन्हरी बोतल में जाम भर के लाई,
टूटी जाती है हाय ! मेरी कलाई।
हाला ले प्याले में डाली है बाला,
पिये जा(ओ) मेरे राजा खाली किये जा।
तुमको जीवन का साथी बनाउं राजा,
मेरे नयनों में आप समाये राजा।

रा० व० महेश—क्या ही सुन्दर है वाह....वाह (राय साहब खन्ना से) राय खन्ना ? तुमने आज कमाल कर दिया ? यह तो वतलाओ इस वुल वुल को कहां से पकड़ा ? वड़ा ही सुन्दर नृत्य औ····र मधुर कंठ (नर्तकी का पुनः नमस्ते करना)

रा० खन्ना—लाता कहां से (प्याला पीकर) मेरी सिस्टर इन्-ला तो है ही,

(नर्तकी का चौंक कर जीभ निकालना)

नही नहीं वड़े वाजार मे जो हरे रंग का कोठा है उसमे तो यह रहती ही है।

(पुनः नर्तकी का हाथ से मना करना व देखना, नर्तकी से)

और कहा वही तो तुम्हारा कोठा है ?

खान वहादुर—(प्याला लेते हुए) जनाव मेरा अन्दाजा गलत नहीं निकला, वड़ी देर से आपके वीवी की और मिस साहवा की सकल को मिला रहा था। आपके कहने पर सव शक रफा हो गया।

राय खन्ना—कैसा शक रफा हो गया ? (मुंह वना कर)

खान वहादुर मोलावक्स—यही कि आपकी सिस्टर-इन-ला है।

(नर्तकी का जीभ निकालना)

राय खन्ना—(खडे हो सीगार चासना दियासलाई कपड़ों पर गिरना उछलने पर, कुर्सी गिरना) क्या कहा, जवान संम्हालें ?

(स्वयं का गिरना)

(रा० व० व खा० व० का दौड़कर उठना)

रा० वहा० महेश—राय खन्ना पजामे से वाहिर क्यों हो रहे हो।

रा० सा० खन्ना—जब मैं नहीं समझता कि साक़ी है तो फिर क्यों ? आप........

(सब का हँसना)

(अन्दर से मारो मारो की आवाज)

खान बहादुर—ठीक साहब हम भी नहीं समझेंगे।

राय बहादुर—(नर्तकी से) कहो ! मिस व्हाइटरो ! आपका राय साहब खन्ना से क्या संबन्ध है ?

खन्ना—(बात काट कर) मेरा सम्बन्ध बिल्कुल नही है साहब ? आप क्या बातें कर रहे हैं ?

रा० ब० महेश—मैं आपसे नहीं पूछता साहब ? (पीना) (नर्तकी से) खन्ना से मिस साहब आप की पहचान कब से है ?

नर्तकी—(मुस करा कर) जब से आपसे है !

(खून में भीगे वस्त्रों से दुर्गादत्त का प्रवेश)

(सब का खड़ा होना)

दुर्गादत्त—नीच, पापी, महेश तेरे पापों का अब परिणाम सामने आगया "तू सुन नहीं रहा है हम चिल्ला रहे हैं। मकान में कई नकाब पोश घुस आये वह देख (सामने दिखा) वह आरहे (भगना)

रा० ब० महेश—(खड़े होकर) खन्ना मेरा पिस्तोल लाओ !

रा० खन्ना—(मेज के नीचे छिपता हुआ) बाबू जान बचाओ !

(जहीर का मय पार्टी के प्रवेश)

जहीर—बहादुरों ठहर जाओ !

खन्ना बहादुर—(जहीर से) आदाव अर्ज (अकड़ते हुये मूछ पर हाथ रखकर जाना)

जहीर—बहादुर महेश ठहर ? (महेश को पकडना)

(महेश का छुडा कर सामने आना)

रा० व० महेश—भाई मुझे मतमारो (घुठनों के बल बैठ) मेरे पर रहम करो।

जहीर—मैंने कभी काफिरों पर रहम नहीं किया तुमतो बड़े भारी बदमाश हो तुम्हे मुझे मारना नहीं हलाल करना है ? (छुरा मारना)

(रा० व० महेश का पछाड खाकर गिरना)

रा० व० महेश—हाय ! राम !!

जहीर—बदमाश ! तूँने कितने ही घरों को वर्बाद किया है क्या अपनी विधवा भावज को कलंक लगा कर तुमने घर से बाहर नहीं निकाला ?

(गिरा हुआ रोते हुए)

रा० महेश—भाई……हा……मैं बड़ा पापी हूं मुझे और मारो। भगवान् ! मैं ही हूं इस पाप का भागी…मारो…

जहीर—(महेश पर शराब का प्याला औंधाकर) लो मरते मरते अपनी प्यारी शराब से प्यार करलो (ठोकर मारकर छुरा उठाना) पापी मरा या नहीं ?

(पुनः मारना)

(दुर्गादत्त का भाग कर आना)

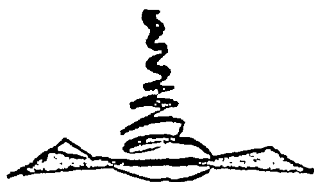
दुर्गादत्त—इसे मत मारो पहले मुझे मारो ?

जहीर—अपने पापी बेटे की इमदाद करने वाले तूभी समाल (छुरा मारने पर)

(चीख कर गिरना)

दुर्गादत्त—हाय ! राम !!

॥ पटा क्षेप ॥



दृश्य चौथा

स्थान—काञ्चिपुर का बाज़ार।

[डाक्टर-रमेश व प्रेमी का घूमते हुए आना]

(रमेश के कंधे पर हाथ रख)

डा० सैयद—रमेश तुमको मेरी बात बिल्कुल समझ में नहीं आई ?

रमेश—नहीं ? डाक्टर जब तक हृदय नहीं बदलता संघर्ष बढ़ता है और हिंसात्मक उपायों से फल अच्छा निकले यह असम्भव है।

प्रेमी—भाई मुझे तो बात समझ में नहीं आती "लातों के देव बातों से नहीं मानते" हत्यारों पर अहिंसा सफल नहीं हो सकती।

रमेश—मुझे आश्चर्य है कि आपको समझ में नहीं आती! जब हम अहिंसा के ही शस्त्र से दुनियां की सबसे बड़ी शक्ति को निकाल देश को आजाद कर सकते हैं तो क्या कारण है कि देश के भीतरी भ्रष्टाचार व अत्याचार को भी इसी ही शस्त्र से नेस्त नाबूद नहीं कर सकते।

डाक्टर— रमेश तुम्हारी इच्छा मैंने तो यही उचित समझा था "न होगा बांस न बजेगी बांसुरी"

(सेठ रामकुमार का प्रवेश)

रामकुमार—जयहिन्द !

सब—जयहिन्द !

रमेश—कहिए रामकुमारजी ! आपने कहा था प्रेमी से क्या वह सत्य है ?

रामकुमार—बाबू मैं क्या दुनियां कह रही है कि राय खन्ना एक रुपया भी नहीं छोडता।

रमेश—ऐसे आदमी को आप छोडते हैं इसलिए आप उस दोष से मुक्त नहीं हो सकते !

रामकुमार—बाबू अब कभी ऐसा नहीं होगा (नोट दिया) देखिये इनपर मजिस्ट्रेट साहब के हस्ताक्षर होगये हैं कल २ बजे का समय निश्चय किया है।

रमेश—यह बात लीक नहीं होनी चाहिये।

डाक्टर—क्या हम भी साथ चल सकते हैं ?

रमेश—अपना चलना ठीक नहीं जब सरकार स्वयं भ्रष्टाचार को समाप्त करने के प्रयत्न में है तो हमे उस की मदद जरूर करना है किन्तु—सरकार का कार्य उसे ही करने देना है।

रामकुमार—मुझे आज्ञा हो ?

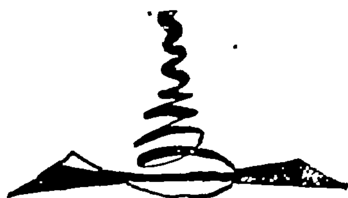
रमेश—अच्छा आप जावें (जाना चाहता है) (एक व्यक्ति का प्रवेश)

आगन्तुक—बाबू मेरी स्त्री निलगई चलिये पुलिस के पास है बाबू (हाथजोड़) मुझसे जमानत मांगते है !

डाक्टर—पुलिस को क्या अधिकार है कि उस के पति से भी जमानत मांग रही है ? इसकी स्त्री, इससे ही जमानत ?

रमेश—डाक्टर पुलिस में सबही तो कानून जानने वाले नही होते। आप इसके साथ जाइये और उन्हे समझा कर इसकी औरत को दिलाइये।

(पटा क्षेप)



दृश्य पांचवां

स्थान—दुर्गादत्त का मकान।

[दुर्गादत्त व महेश चार पाइयों पर लेटे हैं एक मेज पर दवा की शीशियें दूसरी पर स्टो जलता हुआ छोटी मेजपर गुलदस्ता]

(अरुणा नर्स के भेस में सेवा में तल्लीन है)

दुर्गादत्त—बेटी अरुणा आओ, मुझे घबडा हट हो रही है।

(भाग कर जाना)

अरुणा—पिताजी ! (दवा देती हुई) लीजिये दवा पी लीजिए।

दुर्गादत्त—बेटी रमेश को जल्दी बुलाओ मेरा कलेजा निकल रहा है।

अरुणा—(अनार का रस पिलाती हुई) लीजिये यह अनार का रस पीलीजिये मैं उन्हें अभी बुलाती हूँ।

दुर्गादत्त—तुम्हारे हाथ से दवा लेते ही अमृत के समान असर करती है बेटी !

(महेश को वमिट होना अरुणा का दौड़कर जाना)

महेश—बेटी..............मैं...........धो डालूंगा पिलमची तुम रहने दो।

(अरुणा के चिलमची उठाने पर)

अरुणा—दादाजी ! आप लेटे रहें मैं अभी साफ कर डालती हूं ।

(चिलमची साफ कर लाना साबुन से हाथ धोना)

दुर्गादत्त—रमेश ! बेटा क्या अभी नहीं आये ?

(अरुणा दुर्गादत्त के पास जाती है)

अरुणा—क्या आज्ञा है पिताजी ?

दुर्गादत्त—बेटी ! क्या दूध पिलाओगी ?

अरुणा—पिताजी ! अभी गरम करके ला रही हूं ।

(गुल दस्ते के चारो ओर भौंरा घूम रहा है उसे संबोधन कर अरुणा गा रही है)

भँवरा प्रीत की रीत निराली ।
भँवरा प्रीत की रीत निराली ॥

(दूध में पानी मिलाना)

दूध करे पानी से प्रीती,
प्रणय मिलन की यह ही रीती ।
पयने पानी से मिल करके,
अपना रूप बनाया ।

(स्टोपर गरम होने पर)

पानी जलकर पय से पहले,
प्रीत का पाठ पढ़ाया ।

मिला दूध सा प्रेमी साजन,
जीवन डोरि समाली ।
भँवरा प्रीत की रीत निराली ॥
गुन गुन करके मुकुल करोंसे,
प्यारा कीट उठाया ।
पुलकि पुलकि अधरा मृत देकर,
उर-गाल विच लिपटाया ।
प्रीत की रीत निभाई तूने,
अपनी सकल वनाली ।
भँवरा प्रीत की रीत निराली ॥
कौन अछूत समझलो जग में,
प्रीत का पलडा भारी ।
सागर से मिल प्रेम पियाली,
नदियां बनती खारी ।
मञ्जु कुसुम का मधुरस पीले,
नोंच कभी मत डाली ।
भँवरा प्रीत की रीत निराली ॥

(रमेश का प्रवेश)

रमेश—अरुणे ! तुम गाने में मस्त हो पिताजी का भी कुछ ध्यान है।

अरुणा—(चौंक कर) दूध गरम कर रही हूं।

दुर्गादत्त—रानी-बेटी को नहीं छेड़ बेटा। कोई बात नहीं थक जाने पर कुछ गाकर अपनी थकान मिटालेती है। दो बीमारों में अकेली परेशान है बेटा !

रमेश—आपकी तबियत कैसी है ? पिताजी।

दुर्गादत्त—बेटा ! अरुणा वास्तव में अमृत-पाणी है उसकी सेवाओं ने ही आज हमें जीवित रक्खा है। कहो बेटा तुम इतने समय कहां रहे ?

रमेश—पिताजी मुझे विलम्ब हो ही गया था। मैं सर्वोदय दिवस के आयोजन में लग गया था।

दुर्गादत्त—बेटा सर्वोदय दिवस कैसा ?

रमेश—पूज्य बापू का निर्वाण स्मृतिदिवस पिताजी !

दुर्गादत्त—मुझको कोई कष्ट नहीं है बेटा ! तुम अपना कार्य करते रहो, मेरे पास तो रानी बेटी को ही रहने दो। मेरी सेवा इसे ही करने दो तुम राष्ट्र-पिता का कार्य करते रहो बेटा।

रमेश—अरुणा के होने से मुझे संतोष है पिताजी यह कहिये डाक्टर आया या नहीं ?

अरुणा—हां, वे ड्रेसिंग् कर गये।

दुर्गादत्त—बेटा तुमने मेरे कुल को उज्ज्वल कर दिया है। मैं तुमको अब पहचान सका हूं (रोकर) हा आज-तुम्हारी मा होती (सब का नीचा शिर) तुम मेरी साधारण सँतति नहीं तुम देश के रत्न हो तुम्हे प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी बेटा !

रमेश—मुझे केवल आपका आशीर्वाद ही चाहिये पिताजी !

दुर्गादत्त—सुना है हरिजन बस्ती में महिलाओं के लिए तुमने एक रात्रि पाठशाला खोली है और वहां रानी बेटी अरुणा पढ़ाती है ?

रमेश—(अरुणा की ओर पुनः पिता की ओर देख) जी।

(अरुणा का नीचा शिर)

दुर्गादत्त—बेटा उस पाठशाला के लिए अपनी नई सड़क वाली कोठी देता हूं और रानी बेटी के जाने के लिए एक कारभी देता हूं।

रमेश—पिताजी वह पाठशाला अरुणा ने ही प्रारम्भ की है मैंने नही। आपकी दी हुई दोनों वस्तुओं मे कोठी में अरुणा को स्वीकृति के विना ही स्वीकार करता हूं क्योंकि पाठशाला सार्वजनिक है किन्तु कार तो अरुणा के ही काम आवेगी अतः कार के लिए तो लेने वाली अरुणा की एवं आपकी संपूर्ण संपति के अधिकारी बड़े भाई साहब की स्वीकृति की आवश्यकता है।

(महेश का खड़े होना रमेश व अरुणा का दौड़कर पकड़कर लिटाना)

महेश—रमेश ! क्या पापी महेशको कभी क्षमा नहीं करना है ? मुझे खयाल है इस थोड़े मे जीवन मे स्वार्थवश मैंने बड़े बडे पाप किये हैं जिनमे एक तुमको पिता की संपत्ति में बेदखल करना भी है किन्तु परिणाम मे आज मुझे सजा मिल चुकी है। (रोकर)रमेश ? अब तो मुझे क्षमा करदो।

(अरुण का दौड़कर पास जाकर)

अरुणा—दादाजी डाक्टर ने आपको उठने व बोलने के लिए मना किया है, आप लेटे रहें व बोलें नहीं।

महेश—अब इस पापी शरीर को रखना उचित नहीं बेटी ? (रोकर) तुम अपने पति से कहो मुझे माफ करदें और मुझे अपने इस पापी शरीर से अलग होने दो।

रमेश—(महेश के शरीर से चिपट कर) भैया ! आप क्या कह रहे हैं ? मैं माफ करूं, मैं तो आपका सेवक हूं सेवक को जो आप आज्ञा दें वह शिरोधार्य है (रोना) अब कभी शरीर से अलग होने का शब्द नहीं कहें।

महेश—तो यही आज्ञा है रमेश ! तुम पुरानी बातें भूल जाओ और मुझे···वि···दा···क···रो (हिचकी)।

रमेश—भैय्या··········भैय्या···········

अरुणा—(गिर कर) दादाजी····················

दुर्गादत्त—क्या हुआ बेटा····················

॥ पटा क्षेप ॥



दृश्य छठा

स्थान—राय साहब खन्ना का मकान।

(चंपा बाल संवारती हुई यह गाना गारही है)

प्यारे प्यारे! घुघरारे घुंघरारे कारे बार!
जो सवरूँ घुंडी वारों को मैं क्रीम कंघा डार।

दर्पण में देख संवारूं
टेढ़ी मांग निकारू।
कोमल चपल अंगुलियों से,
ले दो चोटी कर डारूं।
पीयाजी के चंचल मन को,
बांधू फांसी डार। प्यारे

(रा० बी०डी० खन्ना का प्रवेश)

रा० खन्ना—चंपा, चंपा पहले मेरी बात सुनलो?

चंपा—(सिर पैर से नजाकत दिखाकर आती हुई) कहिये राय साहब क्या आज्ञा है?

रा० खन्ना—देखो (रुक कर) हां पहले चाय बना लाओ। और (वह जाना चाहती है) सुनो कोई यहां आवे उसे कह देना यहां कमिश्नर साहब है नहीं ?

चंपा—नहीं है ! यह क्यो, क्या किसी की चोरी कर लाये हो ?

रा० खन्ना—(हंसकर) चंपा खन्ना के लिये ऐसे विचार ! वो तो तुमसे कहा है, शायद............

चंपा—शायद क्या, चुप क्यों हो गये, आपका घबड़ाना मुझे पसंद नहीं ?

खन्ना—चंपा घबड़ाने की बात नहीं लेकिन क्या करूँ ? अगर

चंपा—(क्रोध में) मुझे अगर, मगर, शायद, लेकिन, किन्तु, परन्तु कुछ भी पसंद नहीं। आप इन्हीं पैरो दर्वाजे से बाहिर लौट जाइये।

रा० खन्ना—हैं वापिस लौट जाऊं (चौंक कर) मेरी पत्नी होकर यह बातें।

चंपा—यदि आप पत्नी होने का दावा मेरे पर रखते हैं तो अभी चलिये मैं तलाक दिये देती हूँ।

रा० खन्ना—(घुटने टेक दोनों हाथ जोड़) माफ करो माताजी। (दांतों में अंगुली दबा) नहीं-नहीं श्रीमती चंपा देवीजी !

चंपा—मालूम होता है आज आप पागल हो गये हैं ?

रा० खन्ना—पागल नहीं आज आपके सतित्व पर फिदा हो गया हू जैसे सावित्री के सतीत्व ने सत्यवान को बचाया वैसे ही आज श्रीमती चम्पारानी के सतित्व ने राय साहब बद्रीनारायण खन्ना कमिश्नर सप्लाई के प्राणों की रक्षा की।

चंपा—रक्षा····क्या कहीं सांप ने खालिया था ?

रा० खन्ना—प्रिय पूछो मत, सांप क्या साक्षात् यमराज ही आगया था ।

चंपा—(आश्चर्य से) यमराज !

रा० खन्ना—क्या कहूं लेकिन एक बात जरूर अच्छी होगई रमेश के घर जाने की बीमारी हमेशा के लिये दूर हो गई।

चंपा—जिसके साथ एक दांत से आप खाना खाते थे। जिसने आपको कमिश्नर बनाया, इसके विषय में यह क्या कह रहे हैं ? हां यह भी बतलावे ? बाइट्रोज कहां है ?

रा० खन्ना—अरे ! रोज के गाने ने ही तो गजब ढा दिया। बस मैं बेखबर हुआ कि डाकुओं को मौका मिल गया। बदमाश अन्दर घुस आये।

चंपा—(आश्चर्य से अंगुली दांतों तले दबाकर) डाकू ! हाय-राम !! रोज कहां है ?

रा० खन्ना—अरे ! "रोज" को तो रो ली अब मुझे भी तो रो ले मैं मरते मरते बचा हूं।

चंपा—(रोते हुये) हाय ! बतलाइये मेरी बहिन कहां है।

रा० खन्ना—प्यारी घबड़ाओ नहीं। "रोज" डाकुओं के पंजे में रह नहीं सकती। वह मेरी चोटी कट है ? हां राय बहादुर अब दुनियां ही में नहीं हैं वे आ नहीं सकते ?

चंपा—और आप मुंह छिपाकर भाग आये। शर्म तो नहीं आई कहते हुये ? एक मित्र को मरवा दिया। एक अबला को छोड़ आयेऔर यहां अपनी शेखी दिखा रहे हैं। (रोना)

रा० खन्ना—छीः पागल की बच्ची। भागकर कौन आया है ? मैं और खान बहादुर मोलाबक्स दोनों बाकायदा डाकू से आदा-

वर्ज करके चले आरहे हैं (जोर से) तुम ने मुझे क्या समझ रक्खा है ?

चंपा—मैं समझती हूं (खीज कर) चापलूस चट्टू और निगोडे निखट्टू। (रोकर) मुझे बतलाइये रोज कहां है ?

रा० खन्ना—खैर अब समझलो कि रोज मर गई ?

चंपा—(बैठ कर गोडों में मुंह देकर रोते हुए) हाय मेरी रोज ?

(राय का बैठ कर रोना, और सुमेर का प्रवेश)

सुमेर—(चंपा के पास बैठ कर) हाय राम ! क्या हुआ ? जो है सो क्या तुम भी रांड होगई चंपा ?

(रोज का प्रवेश और चंपा के पीछे बैठ कर रोना)

चंपा—(सुमेर से) हाय सुमेर क्या करूँ ? मेरी रोज को डाकू ले गये।

रोज—(खड़ी होकर) जीजी मैं तो आगई ।

(चंपा और सुमेर का खडे होकर रोज से चिपटना खन्ना का हाथ मलना)

रा० खन्ना—सुमेर ! (मुंह विगाड़ कर)

सुमेर—जी बाबू साहब जो है सो हाजिर ! (मुंह बनाकर)

रा० खन्ना—मिस् रोज व मिसेज् खन्ना के लिये चाय तयार करो।

सुमेर—(पैर पटक कर चलते हुए) जो आज्ञा जो है सो अभी लाया (प्रस्थान)

रोज—जीजी ! (खन्ना का घवड़ाना) बाब साहब ! मुझको डाकुओं को सौप कर आप भाग आये ।

र० खन्ना—झूंठ, २ मैंने बडी देर तक पिस्तोल से सामना किया। आखिर कारतूस खतम होने पर भागना पडा

चंपा—रहने दो तुम्हारी पिस्तोल! कभी चलती हुई देखी भी है। खैर होचुका जो होना था। मैं ऐसे राय साहब को यहां रखना नहीं चाहती। आप कहीं दूसरी जगह मकान तलाश करलें।

(सुमेर का चाय लाकर दोनों को देना। रा० खन्ना का चाय उठाने का प्रयत्न करना)

सुमेर—(हाथ पकड़)लेडीज फस्ट्। जो है सो।

(राय का चुप हो कर खड़े होना)

सुमेर—मिस् व मिसेज साहब जो है सो (चाय देकर) लीजिये।

राय—(हाथ जोड़ कर) आखिर मुझे किसी प्रकार माफ करोगी या नहीं?

(कुंड़े खटखटाने की आवाज)

(राय-खन्ना का भाग कर मेज के नीचे छिपना)

चंपा—कौन?

आगन्तुक—यह तो एक बनिया है?

चंपा—अन्दर आइये?

(सेठ का प्रवेश। सुमेर की ओर)

सेठ—राय साहब जयरामजी की।

(खन्ना का निकल कर आना)

हैं आप, जयरामजी की सुमेरजी।

खन्ना—सेठ साहब मेज ठीक कर रहा था। कहिये कैसे पधारे?

सेठ—हुजूर केवल आप के दर्शन करने।

सुमेर—जो है सो, आपने यह मंदिर समझ लिया होगा।

राय०खन्ना—आइये (कुरसी देकर) तशरीफ रखिये कहिये कोई काम ?

सेठ-(बैठकर) कोई कार्य नहीं हां एकछोटा सा कार्य है यदि। आपके हाथ से हो जाय तो गरीबों का गुजर होजावे।

सुमेर—जो है सो यही तो बात है ! लेकिन दर्शन के बाद भेंट और भेंट के बाद जो हैं सो इच्छा पूर्ति की प्रार्थना होनी चाहिये।

सेठ—(एक कागज व दो सौ के नोट देता हुआ) आप दस्तखत करदें बेड़ा पार हैं।

रा०खन्ना—(नोट उठा दस्तखत करता हुआ) किन्तु मैं तो आज सप्लाई से इस्तीफा देरहा हूँ सेठ साहेब !

सेठ—जाते जाते गरीबों का भला आपही कर सकते हैं ?

चंपा—(खन्ना के हाथ से रुपये छीनकर) यह मुझे दे दीजिये ?

सुमेर—(चंपा के हाथ से लेकर) जो है सो आपका खजाञ्ची मैं हूं मेरे पास रखो।

चंपा—सुमेर जाओ मेरी साईकिल लाओ बाग चलना है।

सुमेर— जो है सो हाजिर (साईकिल लाना)

सेठ—(उठकर) मुझे आज्ञा.

(कडा खटखटाने की आवाज)

(पुलिस इंस्पेक्टर, मजिस्ट्रेट व दो सिपाहियों का प्रवेश)

(रा० खन्ना भागना चाहता है)

इन्सपेक्टर—राय सहाब यहीं खड़े रहें।

राय० खन्ना-जनाब आर यह बतलाइये कि किसी भले आदमी के घर मे बिना सूचना अन्दर घुस आना कौन से कानून मे है?

इन्सपेक्टर—जी,यह आप भले आदमी के घर के लिये पूछ रहे हैं न कि आप के घर के लिए। (हथकड़ियें निकाल कर)

सुमेर—क्या राय० साहब भले आदमी जो है सो नहीं?

राय-खन्ना—देखिये मैंने राय बहादुर महेश के डाका डालते या खून करते किसी को नहीं देखा।

इन्सपेक्टर—(हंसकर मजिस्ट्रेट की ओर) यह भी सुनिये (खन्ना से) तो किसने देखा था।

रा० खन्ना—सुना है जहीरने खून किया है देखा बिल्कुल नहीं

(चंपा मुंह मटका रोज का हाथ पकड सुमेर को इशारा कर जाना) चाहती है)

इन्सपेक्टर- (चंपा आदि से)आपलोग खड़े रहें? (खन्ना से) आपको किसने कहा?

रा० खन्ना—कहा किसने? क्या मैं नाम पूछने बैठा था? उनके तो बाप बेटों मे जूत चलते थे या वो वे आपस मे मर गये या उस के भाई सुरेश ने मरवा दिया मुझे क्या मालूम?

रोज—आप इधर उधर की बातें क्यों करते हैं सारी बातें सच क्यों नहीं बतलाते?

राय० खन्ना—आप से कौन पूछता है? आप चले जाइये?

सुमेर—(चंपा की ओर) खिसकने का काम है

सेठ—रुपये देकर बाद मे खिसकिये

इन्सपेक्टर—ठहरिये?

चंपा—हमसे आपका क्या मतलब?

सुमेर—(खन्ना को रुपये देता हुआ रुपये खन्ना के नहीं लेने पर नीचे गिरते हैं) आपके रुपये संभालिये ?

इन्सपेटक्र—रुपये उठा कर (मजिस्ट्रेट का) यह वहीं हैं ?

मजिस्ट्रेट—ठीक वही है (सुमेरसे) तुमने यह कहां से लिये।

सुमेर—मेरा इसमें कुछ नहीं (खन्ना की ओर) बाबू के हैं जो है सो मैं तो इनका नौकर हूं

मजिस्ट्रेट—(इन्सपेक्ट्ररसे) इन सब को हिरासत में ले लें।

चंपा—हम दोनों वहिनें वेगुनाह हैं ?

मजिस्ट्रेट—आपके खन्ना से क्या सम्बन्ध है ?

चंपा—मैं खन्ना की कुछ दिन बीबी रही थी।

खन्ना—हैं! क्या अब नहीं ?

मजिस्ट्रेट—और अब ?

चंपा—अब मैं तलाक दे रही हूं।

मजिस्ट्रेट—आप तलाक पत्र अदालत मे पेश करे। तब तक इनकी बीबी है! और यह कौन है (रोज की ओर)

चंपा—यह मेरी वहिन है ?

मजिस्ट्रेट—यह कहीं भी जा सकती है ?

सुमेर—हुजूर मैं जो है सो इनका (रोज को देख) भाई हूं क्या मैं भी जासकता हूं।

मजिस्ट्रेट—नहीं (इन्सपेक्टर को) आप इन सब को अदालत में पेश करें)

इन्सपेक्टर—जो आज्ञा।

॥ पटाक्षेप ॥

अंक तृतीय

दृश्य पहला

स्थान—बाजार

(दो लड़कों का भोंपू लेकर एलान करते हुए आना)

दोनों—भाइयो और बहिनो आज सायंकाल आठ बजे सुभाष चौक मे कान्हिपुर नगर कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में सर्वोदय दिवस मनाया जावेगा। आशा है पूज्य बापू की प्रतीमा पर पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के लिये सपरिवार पधारने की कृपा करेंगे।

(दो मुसलमानों का प्रवेश)

आगन्तुक—क्या कहा गुलाम रसूल ?

पहला—सुभाष चोक में बापू की मूर्ती पर फूल चढाये जावेंगे।

आगन्तुक—क्या मुसलमान भी फूल चढ़ाने आवेंगे ?

दूसरा—क्यों नहीं क्या मुसलमान हिन्दुस्थान मे नहीं रहते ?

आगन्तुक—अरे गुलाम! तू तो कौम का गद्दार काफिर बना लेकिन दूसरों को बुत परस्त बनाकर क्यों काफिर बनाता है।

पहला लड़का—जिसमें खुदा परस्ती, इमानदारी, वतन परस्ती व बाहमी इत्तहाद है वही सच्चा मुसलमान है गद्दार वे

हैं जो इसके खिलाफ हैं, यदि कब्र पर दिया जलाने व फूल चढ़ाने वाला काफिर हो सकता है, तो बापू की मूर्ती पर भी फूल चढ़ाने वाला काफिर है ?

आगन्तुक—गैर इस्लामी रास्ता चलने से मालूम होता है तुम इस्लामी हुकूमत पसन्द नहीं करते ?

पहला लड़का—(उपेक्षा से) हूं ! क्या बेगुनाहों के खून से हाथ रंगने वाले शैतानो के राज्य से आपका मकसद है ?

आगन्तुक—(जाते हुए इशारा करके) तू सीधे नहीं मानेगा ?

दूसरा लड़का—यह हिन्दुस्थान ही है जहां आप जैसे शैतान भी आराम से रहते है ? (क्रोध से)

(भीड़ मे से एक बुढ़िया का लड़कों से)

बुढ़िया—बेटा ! दुनियां मे सब तरह के आदमी है तुम्हे क्रोध नहीं करना चाहिये ।

पहला लड़का—अम्मा ऐसे लोगों का नहीं ख्याल रखना भी फूस के ढेर मे चिनगारी को छिपाना हैं ?

बुढ़िया—बेटा छोड़ो इन बातों को बताओ सभा का समय कितने बजे का है ?

दूसरा लड़का—अम्मा सांयकाल आठ बजे का है ।

(सब का प्रस्थान)

लड़की—(मा की साड़ी पकड़ कर गाती हुई)

मेरी अम्मा बतादे तू मुझे को महात्मा वे कौन था
(मेरी मा) मेरी मा ! अब तो बतादे तू मुझको
यह बापू कौन था ।

बुढ़िया—जिसकी वाणी में अमृत यह पूरा था कमंठ
त्रिटिया सप्ता में एक दिन रहता महात्मा
वे मौन था।

लड़की—जिसकी सोरत है दुनियां के कोने में
बापू कौन था।

बुढ़िया—दांयें हाथ जिसके दंड,
देख भागता घमण्ड;
रही घुटनों पे धोती,
बाये हाथ थी पोथी
सुनो बेटी मेरी जिसका, घड़ियान रहा
कभी मौन था।

लड़की—जिसको हिन्दू मुसलमान अपना समझे
बापू कौन था।
(मेरी मा) मेरी मा ! अबतो बता दे तू मुझको यह
बापू कौन था।

बुढ़िया— बेटी जर जर शरीर,
जिसे दुनियां की थी पीर;
प्रतिदिन कातता वे सूत,
रघुराज का था दूत।
राम कहूं या कृष्ण कहूं,
मैं बुद्ध कहूं महावीर कहूं।
ईश कहूं मोहमद भी कहूं,
नानक कहूं कि कबीर कहूं।
अब तक समझ में न आया मुझे
बापू जहां में कौन था।

लड़की—मेरी मां मेरी मां समझी हूं मैं हमारा बापू था वे।

बुढ़िया—चिटिया सप्ताह में एक दिन रहता महात्मा
वे मौन था ।
जालिम ने जुल्म ढा दिया सीने पे गोली मार कर
कर जोड़ बापू राम बोले अमर हो प्रभु ध्यान धर
जिसने पाई विजय यहां हिंसा पे अन्त बापू मौन था ।
लड़की—मेरिमा मेरिमा समझी हूं मैं हमारा बापू था वे ।
दोनों-जिसने पाई विजय यों हिंसा पै अन्त बापू मौन था ।

॥ पटा क्षेप ॥

दृश्य दूसरा

स्थान—शान्ति का मकान

(कई प्रकार के शस्त्र रक्खे हैं)

(शान्ति तलवार को निकाल साफ कर रही है)

शान्ति—(तलवार से) पापियों के खून की प्यासी मेरी प्यारी साथिन, तुझको आज मैं अपने लड़के से भी अधिक प्यार करती हूं। मेरी उठती हुई महती ज्वाला को तूने ही शान्त किया है। हिन्दू समाज के पापी कीड़ों! तुमने समाज को घृणित एवं जर्जरित बना दिया है। याद रखो अब यह महाकाली तुम्हारा अवश्य अंत कर देगी। (जहीर का अपने साथियों के साथ बेहोश अरुणा को लेकर प्रवेश)

जहीर—अम्मा! अम्मा! आज मैं एक दुश्मन को तुम्हारी खिदमत के लिये लाया हूं।

शान्ति—हैं! (खड़ी होकर अरुणा को देख) बेटा! यह कौन है ?

जहीर—अम्मी यह वह बदनाम चमार की लौंडिया है, जो रमेश से मोहब्बत करती है, और जिसने मेरे बनाये अछूत मुस्लिमों को वापिस हिन्दू बना लिया और उनके मुहल्लों में पाठशाला खोल कर उनकी औरतों व छोकरियोंको पढ़ाने

लगी थी। आज इसको मजा चखाने को लाया हूं, अब उन सबके बदले इसे ही इस्लाम कबूल करना होगा, वरना मौत के घाट उतरना होगा। (एक आदमी का प्रवेश)

आगन्तुक—आदाब अर्ज।

जहीर—कहो शेरखां। क्या खबर है।

शेरखां—हुजूर मिटिंग का समय हो गया है, अरुणा के तलाश में देर हो रही थी, आखिर यह निश्चय किया गया है कि मिटिंग के बाद अरुणा की खोज की जावेगी।

जहीर—कोई परवाह नहीं मिटिंग में ही इस कांटे को भी निकाल देना है, फिर जहनुम में अरुणा को तलाश करना। चलो क़ौम के दीवानो! तैयारी करो। (अम्मा से) अम्मा मैं जारहा हूं आज मुझे बहुत बड़ा काम करना है।

शान्ति—बेटा जाओ इस कार्य को निर्भय होकर करो (नीचा सिर कर सिर के हाथ लगाना)

जहीर—(उछल कर जाते हुए) अल्ला हो अकबर।

शान्ति—(स्वगत) मेरा दिल क्यों धड़क रहा है, क्या रमेश निर्दोष है, कोई बात नहीं फिर भी वह सांप का बच्चा है?

(अरुणा का तड़फ कर खड़े होना)

अरुणा—मैं कहां हूं? हैं! आप कौन हैं? हैं कौन हैं? जो मेरे स्वामी को मेरे होते हुये समाप्त करने का प्रयास करते हैं? (शान्ति को देख) मा...मा....

शान्ति—चुप रह जालिम! बैठी क्यो नहीं रहती!

अरुणा—मां....मैं जालिम नहीं, जालिम वही है, जो परमात्मा की बनाई दुनिया को तबाह कर रहा है।

शान्ति—(आश्चर्य से) तू क्या कह रही है?

अरुणा—मैं कह रही हूं परमात्मा एक है, उसकी बनाई दुनियां को जो सताता है; वह उसका दुश्मन है। उसकी दुनिया में जो दीन हैं, उनकी सेवा करने वाला ही उसका प्यारा है। परमात्मा के द्रोही की मदद करने वाला गुनहगार है।

शान्ति—क्या कहा अरुणा, क्या मैं गुनाह कर रही हूं क्या मेरा प्यारा बेटा परमात्मा का दुश्मन है?

अरुणा—मां यह बिल्कुल ठीक है, वह परमात्मा का बड़ा दुश्मन है, जैसे रावण और कंस थे।

शान्ति—जिस पापी समाज के गुंडों ने मेरे जैसी निरीह अबला को पतित बना निर्जन वन में छोड़ कर अपने आपको पवित्र समझ और समाज का ऊंचा आसन ग्रहण किया। क्या ऐसे समाज को नेस्त नाबूद कर देना कोई गुनाह है?

अरुणा-मां समाज मनुष्यों से बनता है, एक मनुष्य के गुण्डा होने से सारा समाज खराब नहीं होता। सारे समाज के अच्छे और बुरे आदमियों को खतम करने वाला उससे भी अधिक पापी है, क्योंकि उसने तो एक ही अबला को सताया और दूसरा तो अगणित अबलाओं को निराश्रित बनाता है, असंख्य बच्चों को बिना मां बाप के और अनेक माता पिताओं को बिना बच्चों के बनाता है। मां पाप से पाप को धोने की आशा निरी मूर्खता नहीं तो क्या है?

शान्ति—(अरुणा के गले से चिपट कर) बेटी ! तुम तो कोई अवतार हो, मेरे हृदय में प्रकाश कर दिया, चलो जल्दी चलो बेटी! आज न मालुम ज़हीर किन किन अबलाओं को निराश्रित व किन किन कुलों का सर्वनाश कर देगा।

अरुणा—(पैर छूकर खडी हो) मा चलो।

(दोनों का बुर्का पहन कर प्रस्थान)

॥ पटाक्षेप ॥

दृश्य तीसरा

स्थान—सुवास चौक

[बापू की मूर्ती एवं सभा के अन्य उपकरण]

(एक ओर मर्द हिन्दू मुसलमान दूसरे ओर स्त्रियें बैठी है)

एक व्यक्ति—(खड़े होकर) बन्धुओं ! पूज्य बापू की पुण्य स्मृति मनाने के लिये आज हम उपस्थित हुये हैं। इस जन समूह का नियंत्रण एवं सभा संचालन के लिये हमें एक सुयोग्य नेता की आवश्यकता है इसके उपयुक्त लोकनायक जनबन्धु रमेश-बाबू को मैं समझता हूँ। आशा है आप सब सज्जन इसका समर्थन करके अपने को सुयोग्य नेता के हाथ में देकर कार्य संपादन में सहयोगी बनेंगे।

(प्रेमी खड़ा होकर)

प्रेमी—मैं समझता हूँ, श्री रमेश बाबू के समान हमें कोई दूसरा अनुभवी, योग्य नेता मिलना असम्भव है अतः मैं इसका समर्थन करते हुए बाबू से प्रार्थना करता हूं कि सभापति का आसन ग्रहण कर कार्य संचालन करें।

(रमेश खड़ा होकर)

रमेश—प्यारे भाइयो ! एवं बहिनो !! न मालूम क्यों मैं अपने को आज इस भार के सहन करने में असमर्थ सा पा रहा हूं।

जो रमेश अपने घर को त्यागने में किञ्चिदपि व्याकुल नहीं हुआ। जेल खानों कि यातनाओं को जिस रमेश ने स्वर्ग सुख समझा, आज वही रमेश इतना अव्यवस्थित चित्त है। कि इस भार को वहन करने में पूर्ण असमर्थ है। आशा है आप किसी अन्य सज्जन को यह कार्य देकर मुझे इससे मुक्त करेंगे। (बैठना)

बुर्केवाली अरुणा—(खड़ी होकर) श्रीमान्‌जी ! आज देश जब एक महान संकट में गुजर रहा है। आपके उत्साह महीन वाक्य सुन मुझे बड़ा अफसोस हुआ। जो जनता आपके इशारे पर चल कर आनन फानन में महानतम कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ हुई है। आज आप निजी कारण से असमर्थ होकर क्या मझधार में उस जनता को छोड़ कर्तव्य विमुख होने के दोष से मुक्त हो सकते हैं ? यदि नहीं तो मुझे क्षमा करें और आसन ग्रहण कर मार्ग दर्शन करने की कृपा करें।

सब—ठीक, ठीक बिल्कुल ठीक।

रमेश—देवीजी एवं बन्धुओं मैं जनता की आज्ञा के पालन की अवहेलना नहीं कर सकता (नीचा सिर कर रुमाल से मुंह नेत्र पोंछ कर कुर्सी पर बैठता है)

(सबका ताली बजाना)

(सुमेर का सभा मंडप में प्रवेश)

प्रेमी—(खड़े होकर) आइये सुमेरजी !

(आदमियों के बीच से आते हुए)

सुमेर—हुजूर से मिलने का जो है सो वास्ता नहीं मिलता। करूं क्या आप तक पहुंचने का जो है सो रास्ता नहीं मिलता।

प्रेमी—आप रास्ते से चले आइये अवश्य रास्ता मिलेगा।

सुमेर—रास्ते से जो है सो चलें कैसे बाजार में तो गेहूं का

निसास्ता नहीं मिलता। जवानी आई नहीं चार बुड्ढे हुये, क्यों कि फजर में नास्ता नहीं मिलता। (आकर सुमेर के पास बैठना)

रमेश—अब आपके सामने आदर्श विद्यालय की बालिकायें मातृ वन्दना करेंगी आप यथा स्थान खड़े हो जावें:—,

(चार बालिकाओं का खड़े होकर मातृ वन्दना-गीत गाना)

वन्दना गीत

वन्दे !!! भारत हे जग-जननी !

शान्ति—अहिंसा-सत्य-न्याय पथ, त्रिविध-ताप-भय हरनी।

हिम-किरीट-मस्तक पर राजे,
काश्मीर—सुर-नगर मनोहर, तेरे भाल विराजे,
यमुन, गङ्ग दोउ मल हरनी, वन्दे ! भारत हे जग-जननी।

सिन्धु-मह्य तव भुज बल घेरा,
कटि कस-विन्ध्यराज मंगल मय, तव मुख पूर्व सवेरा।
विश्व-तमनि तू तारन तरनी, वन्दे ! भारत हे जग-जननी।

त्रिंश कोटि सुचि-सुवन तुम्हारे,
कल-कल नाद करत सागर छू, छू कर चरण विहारे।
असरन का दुख-दारिद हरनी, वन्दे ! भारत हे जग-जननी।

(बैठना)

रमेश—बन्धुओं ! अब आपके सामने डा० सैयद हुसैन अपना भाषण देंगे। (सैयद का खड़े होकर)

डा०सैयद—दोस्तों ! और बहिनों ! मैं आपके सामने अपनी तकरीर पेश करूं। इसके पहले कौम के शान्ति पैगम्बर पूज्य बापू जिनकी याद में आजका दिन मनाया जा रहा है। उनके चरणों में अपना सिर झुका कर उनकी समाधी पर श्रद्धा के फूल अर्पण करता हूं। मेरे प्यारे दोस्तों ! आज के दिन देश के बापू ने अपनी लीला समाप्त की थी। उन्होंने अपने मकसद को

हमारे तक पहुँचाकर यह समझ लिया था कि मेरी संतानें मेरे मतलब को समझ गई है। अब मेरी आवश्यकता नहीं। कई मर्तबा बापू ने कहा है कि भारत का हरएक आदमी इश्क हक़ीक़ी और कौमी फ़रायज़ के नशे में मतवाला है। लेकिन फर्क इतना है कि क़ौम क्या है। इसे समझने में हम बेहद भूल कर रहे हैं।

दोस्तो हिन्दुस्थान में बसने वालों की क़ौम एक है चाहे मजहब कितने भी हों। मैं आप लोगों से यह बतला देना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की ही जमीन पर हम पैदा हुए। हमने इसका पानी पीया, हमें इसके साथ गद्दारी नहीं करना चाहिए। हमारे मेल-मिलाप मुल्क के लिये मुबारिक हो। हमारे दिलों में कभी कदूरत पैदा नहीं हो, और हम एक दूसरे को प्यार करें। जिस मुल्क का दाना पानी हमारी रग-रग में पेवस्त है उस मुल्क की खिदमत हमारे लिये बाइसे फक्र है। खुदा की इबादत चाहे कोई कैसे भी करता हो। कोई भी ईमान वाला व्यक्ति अपने को मुसलमान कह सकता है। वह हिन्दुस्तान का बाशिन्दा अपने को हिन्दू। इसलिए दोस्तो हरएक व्यक्ति हिन्दू व मुसलमान दोनों है। खुदा के यहां दोनों में कोई फर्क नहीं खुद गर्ज लोगों ने अपने फायदों के लिए मुल्क के टुकड़े करके हजारों बेकस व्यक्तियों का खून करवा दिया है। लेकिन याद रक्खो। बापू के शान्ति मार्ग पर चलने पर फिर यह एक होकर रहेगा। (ताली)

(जहीर खड़ा होकर)

जहीर—हम नहीं सुनना चाहते यह तकरीर इसलाम को खतरे में डालने वाली है। कोई भी काफिर मुसलमान नहीं हो सकता, हमारा फैसला पाकिस्तान से हो चुका है। हम अखंड पाकिस्तान काश्मीर से लंका तक चाहते हैं। ऐ! अहले इस्लाम के बबरशेरों! यही तकरीरें हैं जिनसे हमारा खून खोलता है।

ऐ खुदावन्द करीम ! तू आलमुलगैब क़ादिरे मुतलक है तू मुझ में ऐसी ताकत दे जिससे मैं काफिरों और गद्दारों को खतम कर जमीन को पाक़ बना अपनी तमन्नाओं को पूरी कर सकूं ।

(कुछ लोग भागना चाहते हैं सुमेर का उठकर जाते हुए)

सुमेर— सुमेर जो है सो झगडों से दूर है और ऐसी खतरनाक सभा में बैठने में मजबूर है । (सलामकरते हुए)

रमेश—(खड़ा होकर) खामोश ! खामोश भाइयों इस में भागने की क्या बात है आप भागिये नहीं सुनिये मेरे प्यारे दोस्तो। (सैय्यद को दिखाकर) सच्चा इस्लाम कभी खतरे में नहीं हो सकता मेरे भोले भाईने इसका मतलब गलत समझ रक्खा है मैं पूछता हूं "लाई लाहि लिल्लाह" यदि सच है तो खुदा एक है ।

(सुमेर का बैठना)

सब—एक ही है ।

रमेश—और कुरान मे लिखे, "अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमी-" का अर्थ है खुदा सब से बडा, तारीफ के काबिल दया का सागर दुनिया का सरजन हार मालिक है । और सुनो प्यारे भाइयों वेद के मंत्र में भी क्या कहा है :—

ईशा वास्य मिदं सर्वं जगत्यां जगत्, इस का भी ठीक यही अर्थ है । फिर सारे जहान के प्राणी खुदा के बन्दे हैं या नहीं ?

सब—खुदा के बन्दे हैं ।

रमेश—और जो खुदा के बन्दों को तकलीफ देता है व उन्हे खतम करता है । क्या खुदा इससे खुश होता है । और इस प्रकार करने वाला कौन है ?

सब—खुदा इस से खुश नहीं वह शैतान है ।

जहीर—हैं क्या मैं शैतान हूं। यह क्या हो रहा है, मेरी अम्मा ! मुझे रास्ता बतलाओ। (पिस्तौल निकाल कर) बस याद आगया अम्मा का बताया रास्ता ही पाक रास्ता है। रमेश! बकवाद बन्द करो और खुदा के पास जाने को तयार हो जाओ !

(रमेश का दौड कर जहीर को पकडना)

(बुर्के मे शान्ति का जहीर के पीछे खडे होना)

रमेश—प्यारे मुल्क के चमकते सितारे ! तेरी लंबी बाजुओं की आज़ाद देश को आवश्यकता है। इन बलवान बाजुओं की ताकत को अपने शरीर पर ही न अजमाओ।

जहीर—(धक्का मारकर) दूर हट काफिर (पिस्तौल तानकर) खबर दार ! (पीछे से बुर्के वाली शान्ति जहीर का पिस्तौल वाला हाथ पकड़ती है)

जहीर—(छुडाने की कोशिश करते हुए) बदमाश कौन है मुझे पकडने वाला (पिस्तौल चलाना शान्ति के लगना)

शान्ति— हाय ! बेटा (गिरना) (जहीर का मुडकर देखना)

जहीर—(बुर्का उतार) अम्मा ! अम्मा !! क्या मेरे ही हाथ से। अल्लाह! तेने यह क्या किया ?(रमेश का दोडकर शान्तिके पास आना लोगों का भागना)

शांति—बेटा ! जगदीश ! तुम·······जगदीश हो। यह रमेश बाबू·······तुम्हारे···चचा·······हैं। बेटा! इन के पैर छूओ ! (अरुणा का बुर्का फैंक शान्ति के पैर सहलाना)

रमेश—(शान्ति के पैर पकड़ कर) भाभी ! मेरी भाभी !

सुमेर—हैं, खून ! खून !जो है सो पुलिस ! पुलिस ! (भगना)

शान्ति—(रोते हुए) रमेश ! तुमको याद है मैं तुम्हें पुत्र से भी विशेष प्यार करती थी ?

रमेश—याद है (रोते हुए) मां..............

शान्ति—मैं तुम्हारे कार्य से बहुत प्रसन्न हूं। तुमने देश का भारी काम किया है, किन्तु तुम पर मातृजाति का कोई अहसान नहीं। तुमने स्त्रियों की समस्या पर कुछ भी खयाल नहीं किया। तुम्हे यह नहीं भूलना चाहिये कि इसी जाति ने अपने गर्भ से राम, कृष्ण, ईशा, बुद्ध, मुहम्मद, दयानन्द, और गान्धी उत्पन्न किये थे। तुमने इन की अवहेलना की, तो समझ लेना देश के उत्थान में भारी कमी रखदी है।

रमेश! मैं कलंकिनी हूं क्या तुम कलंकिनी के (जहोर का हाथ पकड़) एक मात्र प्यारे पुत्र को अपना पुत्र समझोगे।

रमेश—मा! तुम पवित्र हो! तुम शक्ति हो! तुम्हे जो कलंकिनी बतावे स्वयं पापी है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि समाज की इस घातक अपवित्र अवस्था को स्वच्छ बनाऊंगा। और जगदीश मेरा है। मैं इसको कभी अपने से भिन्न नहीं समझूंगा।

शान्ति—तो इसके सिरपर हाथ रक्खो (रमेश का हाथ रखना) बेटा जगदीश आ····ज····से····तुम···· रमेश के हो।

जहोर—मेरी अम्मा! मैंने कभी अम्मा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया।

॥ पटाक्षेप ॥

दृश्य चौथा

स्थान—अदालत

[मजिस्ट्रेट के पास सरिश्तेदार सामने एक ओर पुलिश इन्सपेक्टर एड्वोकेट जनरल, दूसरी ओर कटघरे मे रा० ब० खन्ना, सुमेर, कठघरे से वाहिर चंपा व्हाईट्रोज]

(सब अदालती वेष भूषा में)

मजिस्ट्रेट—(चंपा से) कहो ईश्वर को हाजिर नाजिर समझ कर सच सच कहूंगी।

चंपा—ईश्वर को हाजिर नाजिर समझ कर सच सच कहूंगी।

मजिस्ट्रेट—तुम्हारा नाम क्या है ?

चंपा—मेरा यहां का नाम चंपा व घर का नाम कमला।

मजिस्ट्रेट— हैं "घर का व यहां का" क्या मतलब ?

चंपा—श्रीमान जब मुझ को राय साहब यहां लाये नाम चंपा रक्खा और मेरी बहिन जिसका नाम पद्मा था, व्हाइट्रोज रक्खा।

मजिस्ट्रेट—नाम बदल कर रक्खा ? (हंस कर)

चंपा—जी हां।

(बद्रीनारायण खन्ना का दांतों मे अंगुली दवाना)

मजिस्ट्रेट—तुम्हारे पिता का नाम क्या है ?

चंपा—हुजूर मुझे खयाल नहीं क्योंकि जब में ७वर्ष की थी

तब ही मेरे को व मेरी बहन को खन्ना सहाब ले आये थे।

मजिस्ट्रेट—फिर उस समय बाद कहां रही ? क्या खन्ना के पास ?

चंपा—खन्ना बाबू ने अपनी आटे की चक्की पर गेहूं साफ करने को रखली।

मजिस्ट्रेट—विवाह कब हुआ ?

चंपा—जब चक्की बेच दी तो मुझे अदालत में लाकर मैरिज कर लिया।

मजिस्ट्रेट—ब्हाईट्रोज कहां रही और क्या करती रही ?

चंपा—मेरे साथ ही रही, उसको गाना नाचना सिखाया।

मजिस्ट्रेट—यह बतलाओ तुम्हे ख्याल है, तुम्हारे माता पिताओं ने तुम्हारा तलाश नहीं किया ?

चंपा—श्रीमान् माता पिताओं (खन्ना का दांत चबाकर हाथ मलना) को तो इन्होंने पहले ही जहर दे दिया था।

मजिस्ट्रेट—फिर उनकी तहकीकात नहीं हुई ?

चंपा—उन्हें मोटर में डाल गंगा में बहा दिया गया और उसी मोटर से हमें घर ले आये।

खन्ना—गलत बिल्कुल गलत। हुजूर मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता। इन दोनों बहिनों ने ही उन्हें गला दबाकर मार दिया।

मजिस्ट्रेट—इसका क्या सुबूत है ? आप निश्चय ही खून के दोषी हैं।

खन्ना—हुजूर मेरा इस में बिल्कुल दोष नहीं, मुझे खान-बहादुर मोलाना ने जहर लाकर दिया और कहा इन्हें खतम कर छोकरियों को ले चलो।

(दर्शक गैलरी पर रमेश, अरुणा, सैयद, प्रेमी, का आकर के बैठना)

मजिस्ट्रेट—क्यों चंपा क्या यह ठीक है?

चंपा—श्रीमान् यह ४ आदमी गये थे मरने के बाद पिताजी को कार में डाल दिया। मां का स्वांस नहीं निकला दूसरे ने गला दबाया वह मरगई। मरने बाद उसे भी कार में डाल ऊपर बोरिये डालदी। जब हम रोने लगी हमें मारा और ले आये। रास्ते में गंगा में उन दोनों की लाशों को फैंक दिया।

मजिस्ट्रेट—यह बतला सकती हो वे चारों आदमी कौन थे। चंपा—हां बतला सकती हूं, राय बहादुर महेश, खान बहादुर मोलाबक्स, सुमेर, खन्ना साहब।

सुमेर—मैं नहीं था हुजूर मैं तो जो है सो पुलिस का आदमी हूं पुलिस गवाह देने लाई है।

मजिस्ट्रेट— क्या यह भी बतला सकती हो यह इनके साथ क्यों गये थे तुम्हारे माता पिताको मारने या तुम्हे लेने ?

चंपा—हुजूर उन्हे मारने पर ही तो हमे लासके। और विशेष बाते सुमेर बतला सकता है।

मजिस्ट्रेट—कहो सुमेर ?

सुमेर—हुजूर मैं तो चाय बनाने गया था, खन्ना ने राय ब महेश का काम किया था, इसही के कारण महेश भी साथ गया था।

मजिस्ट्रेट—अपना काम क्या! बतला सको गे ?

सुमेर—यही उनकी भावज शान्ति को जो है सो गर्भ रहने पर उसे मरवा कर खन्ना से डल वाया था तो खन्ना को चोपाया कर ने का जो है सो उन्ही को तो फिक्र था।

मजिस्ट्रेट—उसे क्यो मरवा दिया वतलाओ गे ?

सुमेर—जो है सो उसे गर्भ था ?

मजिस्ट्रेट—क्यों खन्ना साहब !

खन्ना—हुजूर उसको मैंने नहीं मारा यह झूंठ है।

मजिस्ट्रेट—पैरोकार साहब और क्या मामला है।

एडवोकेट—सेठ कों बुलावें (चपरासी से चपरासी का बुला कर लाना)

(सेठ का प्रवेश)

मजिस्ट्रेट—कहिये ईश्वर की साक्षी से सच सच कहूंगा

सेठ—ठीक है सहाब।

मजिस्ट्रेट—ठीक क्या है मुहसे बोलिये।

सेठ—यह ठीक है कि खन्ना ने मेरे से २१०) रु० लिए।

मजिस्ट्रेट—ईश्वर को साक्षी रख कर कह रहे हो।

सेठ—जी ईश्वर को साक्षी देकर।

मजिस्ट्रेट—कहिये कितना परमिट मिला व कितने रुपये मागे।

सेठ—हुजूर १० गांठ भेजने का २१०) रु० दिया जिनपर आपके साइन हैं।

मजिस्ट्रेट—ठीक है मेरी नोलेज में है (नोट निकाल) नोट यही हैं ?

पैरोकार—हुजूर यह उन डाकुओं से भी मिले है जिन्हों ने महेश बाबू के यहां डाका दिया है।

मजिस्ट्रेट—इस की गवाही।

पैरोकार—मिस व्हाई ट्रोज इस के सबूत में बयान देंगी।

मजिस्ट्रेट—मिससाहब ! कहिये ? भगवान को हाजिरनाजिर समझ सच सच कहूंगी।

मिस व्हाईट्रोज—भगवान को हाजिर नाजिर समझ सच सच कहूंगी।

मजिस्ट्रेट—राय ब० महेश के डाके के सम्बन्ध में ? आप क्या जानती हैं ?

मिस—जब डाकू महेश को मार चुके, मुझे साथ ले कर खन्ना डाकुओं के पास आये और मुझे उनको सौंप आप चले गये ! मुझे कह गये अभी आया पुलिस को लाता हूं, २ दिन बाद मैं तरकीब से निकल भागी।

मजिस्ट्रेट—डाकू ने इससे क्या कहा ?

मिस—कहा आप जावें।

मजिस्ट्रेट—क्या तुम डाकू का मकान जानती हो ?

मिस—मुझे डाक्टर ने खान बहादुर भोलाबक्स के मकान पर रक्खी थी।

मजिस्ट्रेट—कहिये खन्नासाहब आप कुछ सफाई में कहना चहाते हैं।

खन्ना—हुजूर मेरे पास कोई सफाई नहीं।

मजिस्ट्रेट—आप पर फरारी, हत्या, डाकाजनी, दंगा भृष्टा-चार आदि दोष साबित हैं, इनमें कमसेकम ७ वर्ष, फांसी, आजन्म

कारावास १० वर्ष व १० हजार जुर्माना की सजायें साथ साथ भुगतनी होगी और चंपा का तलाक मंजूर कर इसे दूसरे विवाह की इजाजत देता हूं, सुमेर सरकारी गवाह की हैसियत से मुक्त किया जाता है।

खन्ना—(ऊपर देख) प्रभो मैंने आपको अब पहचाना आपके यहां देर है अंधेर नहीं पापों के परिणाम में मुझे जो सजा मिली है वह कम है प्रभो ! मैं सच कहता हूं सजा से विशेष पाप मैंने किये हैं (सिपाहियों का पकड़ कर ले जाना)

सुमेर—दादा (रोकर) क्या जो है सो मैं भी फांसी पर साथ चलूं।

मजिस्ट्रेट का घंटी लगाना चपरासी का प्रवेश

चपरासी—हाजिर !

मजिस्ट्रेट—जहीर डाकू ! पुलिस पैरोकार

चपरासी—जो आज्ञा ! (प्रस्थान)

(जहीर का खादी के वस्त्रों मेंपुलिस के साथ प्रवेश)

मजिस्ट्रेट—एडवोकेट महोदय ! कहिये आपके गवाह आज तो उपस्थित हैं ?

एडवोकेट—श्रीमान् मैंने बहुत प्रयत्न किया किन्तु........

मजिस्ट्रेट—किन्तु, परन्तु से काम चलने वाला नहीं ! आज तक आप सबूत पक्ष के एक भी गवाह नहीं लासके. जहीर और जगदीश पर लगाये लूट, हत्या, डाकाजनी के अभियोग असत्य हैं इसमें पुलिस की पूरी शरारत मालूम होती है. इनपर लगाया गया माता की हत्या का अभियोग भी असत्य प्रतीत होता है।

एडवोकेट—महोदय ! मैं क्षमा चाहता हूं, हुआ यह सबकुछ हैं लेकिन आश्चर्य है कोई भी व्यक्ति गवाह बनने को तैयार नहीं।

मजिस्ट्रेट—क्यों नहीं, पुलिस के अधिकारियों को इसमें दोषी करार दिया जावे, क्योंकि वे सब प्रकार इस केस में असफल सिद्ध हुए हैं। कहो जगदीश तुम कुछ कहना चाहतेहो ?

जगदीश—श्रीमान् मुझे बहुत कुछ कहना है।

मजिस्ट्रेट—यह बिल्कुल ठीक है तुम अबतक निर्दोष सिद्ध हो चुके हो। तुम्हें जो कुछ कहना है कहो, अदालत उचित न्याय करने को बाध्य है।

जगदीश—श्रीमान् ! मैंने कभी असत्य नहीं बोला और न कभी बोलूंगा। पूज्या माताजी की आज्ञा से मैंने लूट व हत्यायें की। (रमेश आदिका आश्चर्य से देखना) मजहब के नाम से हजारों बेगुनाहों से होली खेली। परिणाम यह हुआ कि इन अभागे हत्यारे हाथों से पूज्या माताजी भी सुर लोक सिधारी। अन्ततः माताजी ने रमेश बाबू की आज्ञा पालन करने की आज्ञा प्रदान की। बाबू के उपदेश व माताजी के स्वर्गवास से हृदय में प्रकाश हुआ। हिंसासे विश्वास हटगया अहिंसा की विजय हुई और मैंने पूज्य महात्माजी के सत्य मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करली। आपके पुलिस परोपकार व पुलिस अफसर सच्चे व निर्दोष हैं। दोषी मैं हूं मुझे आप उपयुक्त दंड देने की कृपा करें मैं सहर्ष भोगने को तैयार हूं (नीचा सिर)

सब—वाह, वाह, खूब, खूब !

मजिस्ट्रेट—अब अहिंसा में तुम्हारा विश्वास हो गया यह सत्य है ?

जगदीश—जी ! मैं अपने दृढ़ विचार में कृत संकल्प हूं।

मजिस्ट्रेट—जगदीश अदालत तुम्हारी सत्यता पर मुग्ध है मालूम होता है जो भी दोष हुआ है, वह तुम्हारी स्वयं की इच्छा से नहीं आदेश से हुआ है। प्रथम तो तुम्हारे पर कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हो सके हैं पुनः तुम्हारे स्वयं के स्वीकार करने पर भी तुमने साथमें अहिंसा पर विश्वास कर लिया है यही कारण है कि अदालत भी तुम्हारे पर विश्वास करती है और इस आशा पर तुमको मुक्त करती है कि तुम अपनी प्रतिज्ञा से मरण पर्यंत विचलित नहीं होओगे। मैं पुलिस को आज्ञा देता हूं कि जगदीश को तुरन्त मुक्त करदें।

पुलिस आफीसर—जो आज्ञा।

(सबका ताली बजाना)

पटाक्षेप



दृश्य पांचवां

स्थान—विवाह मंडप

(अरुणा व रमेश वर-वधू के भेष में, सामने पंडित
एक ओर जगदीश सैयद प्रेमी आदि)

(बीच में यज्ञ-कुंड)

आचार्य—आप सब लोग यह अशीर्वादात्मक मंत्र बोलकर पुष्प वर्षा करें:—

(दुर्गादत्त सब को फूल बांटता है)

जगदीश—पिताजी मुझेभी (पुष्प लेकर)

आचार्य—ओ३म् सौभाग्यमस्तु !

सब—ओ३म सौभाग्यमस्तु (पुष्प वर्षा)

आचार्य—ओ३म् शुभं भवतु !

सब—ओ३म् शुभम् भवंतु ! (पुष्प वर्षा)

सब—ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

समाप्त



शुद्धि पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
३	१८	द्गेजिये	दीजिये
१६	७	अर्पण	अर्पण
२५	१४	संपति	संपत्ति
,,	१६	स्वार्थवस	स्वार्थवश
,,	२३	अकरण	अकरुणा
,,	२५	व	और
५८	२२	सतित्व	सतीत्व
,,	२३	,,	,,
५६	१	प्रिय	प्रिये
,,	८	याइक्रोज	लाइक्रोज
६०	४	निरुद्द	निरुद्ध
,,	२२	बाव	बाबू
६१	६	आपके	आपका
६५	६	तत्वावधान	तत्त्वावधान
,,	७	प्रतीमा	प्रतिमा
,,	७	मूर्ती	मूर्ति
६६	२१	मुसे	मुझे
६८	५	हिसा	हिंसा
,,	,,	[illegible]	[illegible]
,,	६	मेरिना मेरिना	मेरीना मेरीना
,,	,,	वे	यह
७०	१	लाया हूं	लाया हूं।
,,	१०	[illegible]	[illegible]
७१	१४	[illegible]	[illegible]
७२	२	[illegible]	[illegible] हैं।
७३	२	[illegible]	[illegible]
,,	१६	[illegible]	[illegible]

७४	७	उत्साहनहीन	उत्साहहीन
७६	७	लोगों से	लोगों को
७६	१०	मुवारिक हा	मुबारक हो
,,	१७	दानों में	दोनों में
,,	,,	नहीं	नहीं।
७७	११	मतलल	मतलब
,,	,,	रख्खा है	रक्खा है
,,	२२	य	या
,,	२३	होताहै	होत है ?
,,	२५	नहीं	नहीं,
७८	१०	कफिर	काफिर
७६	१७	उलंघन	उल्लंघन
,,	१६	पटाद्वेव	पटाक्षेप
८३	८	साहब	साहब !
,,	१७	जी	जी,
८४	३	गवाही,	गवाही
,,	२	बयान	बयान
,,	१३	गये	गये
,,	,,	लाताहूँ,	लता हूँ।
,,	२१	चहाते हैं	ाहते हैं।
,,	२३	भृष्टा	भ्रष्टाचार
८५	७	कमहै	कमहै।
,,	,,	कहताहूं	कहताहूँ।
,,	,,	हैं	हैं।
,,	२२	होती है	होती है।
८६	१	चाहता हूं	चाहता हूं।
,,	२	आश्चर्य है	आश्चर्य है कि
,,	१४	वेगुनाहों से	वेगुनाहों के खून से
,,	,,	परोपकार	परोकार